

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 मार्च 2025

अंक 462 मार्च 2025

चुकमुक

बाल विज्ञान पत्रिका

ओबवा कूटे टेसु कूले
कोयल बोले डार-डार



चकमकँ

बूलभुलैया	2
खुसरो दरिया प्रेम का - वसुन्धरा बहुगुणा	4
मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 9	6
- आर एस रेश्वर राज, र पी माधवन व साथी	8
एक विद्रोह रेसा भी... - बंजारी ढाल का सत्याग्रह	11
- सी एन सुब्रह्मण्यम्	14
नर पते - बन्दरों के बीच जीवन - दितु	18
क्यों-क्यों	22
समोसों की महक - वैशाली थापा	24
चित्रपहेली	32
गेंद - लाबोनी शॉय	33
पंखे कब चलाने चाहिए?	34
बेमंटी - अमित कुमार	36
माथापच्ची	43
मेरा पत्ता	44
तुम भी जानो	
सकल बन - अमीर खुसरो	



आवरण चित्र: प्रिया कुरियन

सम्पादक	डिजाइन
विनता विश्वनाथन	कनक शशि
सह सम्पादक	सलाहकार
कविता तिवारी	सी एन सुब्रह्मण्यम्
विज्ञान सलाहकार	शशि सबलोक
सुशील जोशी	
उमा सुधीर	

एक प्रति : ₹ 50
सदस्यता शुल्क (रजिस्टर्ड डाक रहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/बैंक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - रेटेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

खुसरो पाती प्रेम की बिरला बाँचे कोय।
वेद, कुरान, पोथी पढ़े, प्रेम बिना का होय।

खुसरो दिरिया प्रेम का

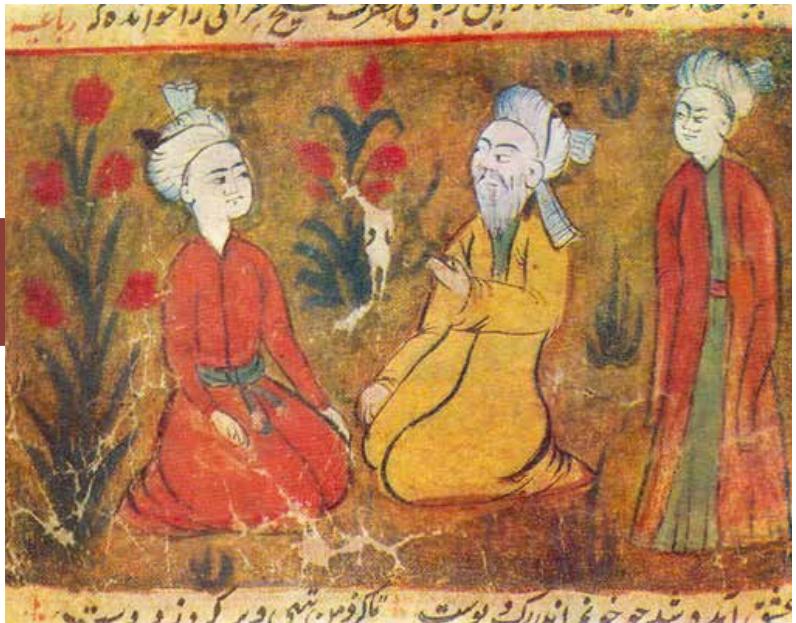
वसुन्धरा बहुगुणा

तबले की तिरकिट, सितार की सरगम, कवाली जो बनी कविता और सुरोताल का संगम। यह दुनिया इन नगीनों से महरूम रह जाती, गर खुसरो न होते।

गहरे पानी जितनी धीर गम्भीर बात बस यूँही कह देना, चाहे फिर मिसरा हो, या कसीदा, मसनवी, तराने, रुबाई, या फिर हो सूफी काव्य। यही तो है सदी दर सदी ज़माने पर खुसरो की छाप।

कितना कुछ ईजाद किया खुसरो ने। तुम उन्हें किसी आविष्कारक या अन्वेषक से कम समझने की भूल न कर बैठना! आज के युग में अगर खुसरो तुम्हारे विद्यालय या कक्षा में होते, तो टीचर उन्हें पॉलीमेथ यानी अनेक प्रतिभा वाले छात्र से कम न समझते।

आज के उत्तर प्रदेश के पटियाली, कासगंज में जन्मे खुसरो गंगा के तीर बैठे बचपन से ही कभी तुकबन्दी करते, तो कभी कविता इत्यादि रचते रहते। कम उम्र में पिता का साया सर से उठ गया था। लिहाजा खुसरो अपने घर से कहीं और चल दिए। साथ में माँ थीं और छोटा भाई। कुछ समय बाद खुसरो मलिक छज्जू की सेना में बतौर युवा सिपहसालार भर्ती हुए। छज्जू बलबन का भतीजा था। छज्जू के ज़रिए ही शायद उनका काव्य बलबन की नज़र में आया होगा।



अमीर खुसरो अपने शागिर्दों के साथ।

सिपाही बने खुसरो न जाने किधर-किधर भटके होंगे। ऐसे ही एक दिन खुसरो आ पहुँचे दिल्ली और दिल्ली सल्तनत में सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में दरबारी नियुक्त हुए। फिर क्या था। अन्धा क्या चाहे, दो आँखें। दिल्ली सल्तनत की ही छत्रछाया में खुसरो जैसे विद्वान की कविताओं, गद्य, पद्य, और संगीत रचनाओं ने ज़ोर पकड़ा।

खिलजी ने उन्हें तूती-ए-हिन्द के खिताब से सम्मानित किया। इस बीच उन्होंने अनेक रचनाएँ कीं। अगर सुना हो, तो बेहतर। न भी सुना हो, तो घर या आस-पड़ोस के बड़े-बूढ़ों से पूछना। शायद ही कोई ऐसा शख्स हो जिसने कवाली, गज़ल और गीतों में पिरोए हुए खुसरो की कविताओं के अनमोल मोती न सुने हों।

श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित फ़िल्म जुनून का गीत, “आज रंग है” हो, गुलामी का गीत, “ज़िहाले मिस्किन” हो, या फिर “सकल बन फूल रही सरसों” – सबके रचनाकार खुसरो ही तो हैं। और “छाप, तिलक सब छीनी तोसे नैना मिलाइके” को कौन नहीं जानता!

खुसरो यही कोई 47 वर्ष के रहे होंगे जब एक ही साल के अन्दर उनकी माँ और भाई का देहान्त हो गया। खुसरो अपने उस हृदय विदारक दुख को भी मात्र दो

पंक्तियों में व्यक्त कर रह गए। फिर खुसरो सूफी पद्धति की ओर चल दिए। सन 1310 में खुसरो ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य बने। गुरु के प्रति अमिट प्रेम के प्रतीक थे खुसरो। सूफी जिन्दगी में उन्होंने बहुत कुछ देखा, समझा, बुना और गुना।

अमीर खुसरो बड़ी आसानी से भाषाओं और बोलियों का मेलमिलाप करने में पारंगत थे। फिर चाहे वो फारसी हो या अरबी, ब्रज हो या हिन्दवी/हिन्दुस्तानी। उन्होंने सिर्फ गीत और गजल ही नहीं बल्कि किस्से, कहानियाँ और पहेलियाँ भी लिखीं। उनकी कुछ पहेलियाँ तुम इस अंक के पेज 35 पर पढ़ सकते हो।

खुसरो को जो दिखा, उन्होंने वो लिखा। जो महसूस किया, वो लिखा। जो सोचा, वो लिखा। जो समझा, वो लिखा। उनके गीत, उनका काव्य तह दर तह मन को छू लेते हैं। उनकी कई रचनाएँ एवरग्रीन हैं।

अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने समाज और उसमें रहने वाले भाँति-भाँति के लोगों को बखूबी दर्शाया है। महिलाओं का समाज में स्थान, उनकी जद्दोजहद, उनका शोषण, उन पर सामाजिक दबाव वगैरह-वगैरह भी खुसरो के काम में देखने को मिलते हैं। उनकी रचनाएँ समाज का आईना हैं। अफसोस, वे आज भी सामयिक लगती हैं।

खुसरो ने ही दिल्ली घराने की स्थापना करी। बलबन के ज़माने से लेकर अलाउद्दीन खिलजी के ज़माने तक कितने ही सुल्तान आए और गए। तख्त पलटे। पर खुसरो और उनकी कविता बरकरार रही। अपनी रचनाओं और काव्य के माध्यम से वे संसार को कितना कुछ देकर गए।

शब्दों और सोच के दरिया में डूबकर खुसरो पार हो गए। और छोड़ गए हम सभी के लिए कुछ बातें, कुछ गीत। क्या मालूम हम में से कितने जीवन के इस रहस्यमयी दरिया में उतरने की हिम्मत दिखा पाएँगे। कितने गोते खाएँगे। कितने डूबेंगे और न जाने कितने ही पार हो पाएँगे।

मंकु
मंकु

खुसरो के रंग



अंकित चड्ढा एक उभरते दास्तांगों थे। उन्होंने खुसरो के जीवन पर बहुत अध्ययन किया और एक दास्तान तैयार की— खुसरो के रंग। इसे वो अपने साथियों के साथ दास्तान और गीतों के रूप में प्रस्तुत करते थे। आज अंकित चड्ढा नहीं रहे लेकिन यूट्यूब के इस लिंक पर उनको सुना और देखा जा सकता है।

अंकित चड्ढा ने खुसरो के ऊपर द मैन इन द रिडल्स नाम की एक किताब भी लिखी है। खुसरो के ऊपर तैयार की गई इस दास्तानगोई में अंकित ने खुसरो व उनके उस्ताद हजरत निज़ामुद्दीन औलिया के बीच के प्रेम को व्यक्त किया है। इस बारे में दिए एक इंटरव्यू में अंकित कहते हैं कि गुरु-शिष्य परम्परा की सबसे खास बात दोनों के बीच का अथाह प्रेम है, जो सीखने के लिए बेहद जरूरी है।



खुसरो व उनके उस्ताद हजरत निज़ामुद्दीन औलिया।

मार्च 2025

भाग - 9

मेहमान जी कभी गए ही नहीं

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे
हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

आर एस रेशू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन,
दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गस और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाभेकर

सिलमिली/वुलफ्लार

वैज्ञानिक नाम: सेलोसिया अर्जेंटिया
(*Celosia argentea*)

मूल: उष्णकटिबन्धीय अफ्रीका

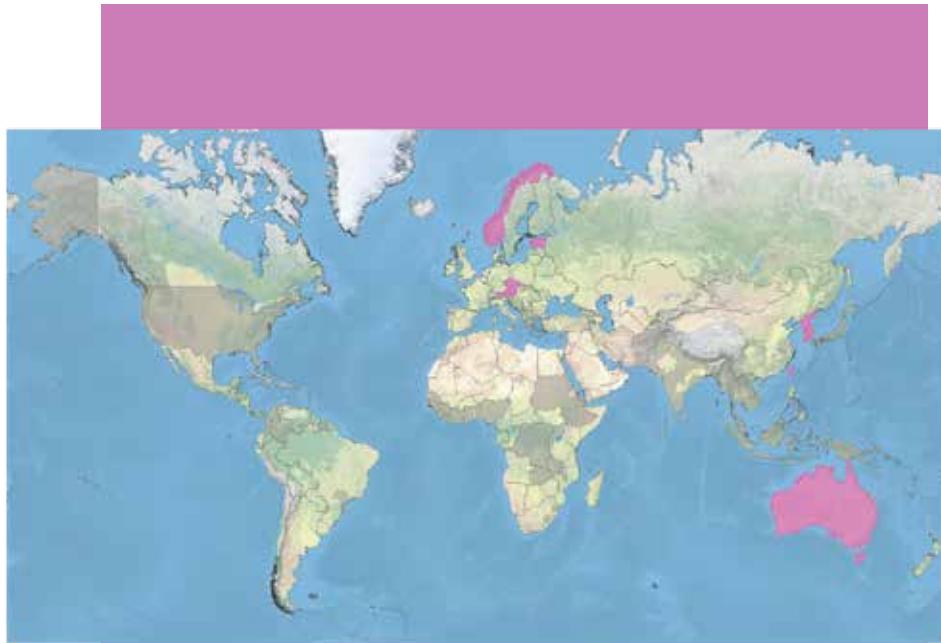
कैसे पहुँचा: माना जाता है कि भारत
में इसे खाद्य फसल के रूप में लाया
गया। हालांकि दुनिया के कुछ इलाकों
में इसे बगीचे के सजावटी पौधे के
तौर पर लाया गया।

सिलमिली का पौधा लम्बा और सीधा होता है। यह 1 से 1.6 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। इसकी अनेक शाखाएँ होती हैं। इसके लम्बे, सँकरे व अण्डाकार पत्तों के सिरे नुकीले होते हैं। ये आमने-सामने ना होकर एक के बाद एक होते हैं। सिलमिली के फूल स्पाइक गुच्छों में पाए जाते हैं – मतलब इनके डण्ठल नहीं होते हैं और ये सीधे तने पर खिलते हैं। ये गुच्छे 3.5 से 15 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं। इन स्पाइक में अनेक छोटे-छोटे गुलाबी सिरों वाले चाँदी जैसे सफेद रंग के फूल होते हैं। इसका एक पौधा 2000-3000 तक राई सरीखे बीज पैदा कर सकता है। यह बीज मिट्टी में लम्बे समय तक बने रहते हैं।



असर

सिलमिली मूँगफली, रागी और मक्के के खेतों में खरपतवार के रूप में पाया जाता है। मिट्टी के पोषक तत्वों के लिए यह फसलों से प्रतिस्पर्धा करता है। इसके कारण टमाटर के खेतों में फल की उपज में 47% तक की कमी देखी गई है। इसके पत्ते खाए जा सकते हैं और अफ्रीका के कुछ इलाकों व अन्य उष्णकटिबन्धीय इलाकों में इसे पत्ती की फसल के रूप में उगाया जाता है।



प्रवेश

स्वाभाविक

मूल जानकारी दर्ज नहीं

*हालाँकि इस नक्शे में दिखाया नहीं गया है, पर प्रायद्वीपीय भारत में सिलमिली को एक आक्रामक एलियन पौधे के रूप में जाना जाता है।



बन्दोबस्त

सिलमिली खेतों में आक्रामक रूप से फैलने वाला और आम तौर पर मिलने वाला खरपतवार है। ये जुताई के बाद फरवरी-मार्च में उगता है। फसलों पर हानिकारक प्रभाव से बचने के लिए इस खरपतवार को उगने के 30 दिनों के अन्दर निकालना बेहतर होता है। इसका नियंत्रण मुश्किल होता है क्योंकि यह एक ही फसल चक्र के दौरान मिट्टी में मौजूद बीजों से कई बार उग सकता है। सिलमिली के नियंत्रण में शाकनाशियों के मिश्रण का इस्तेमाल किया जाता है।

मुक्त

ब्रकम कर

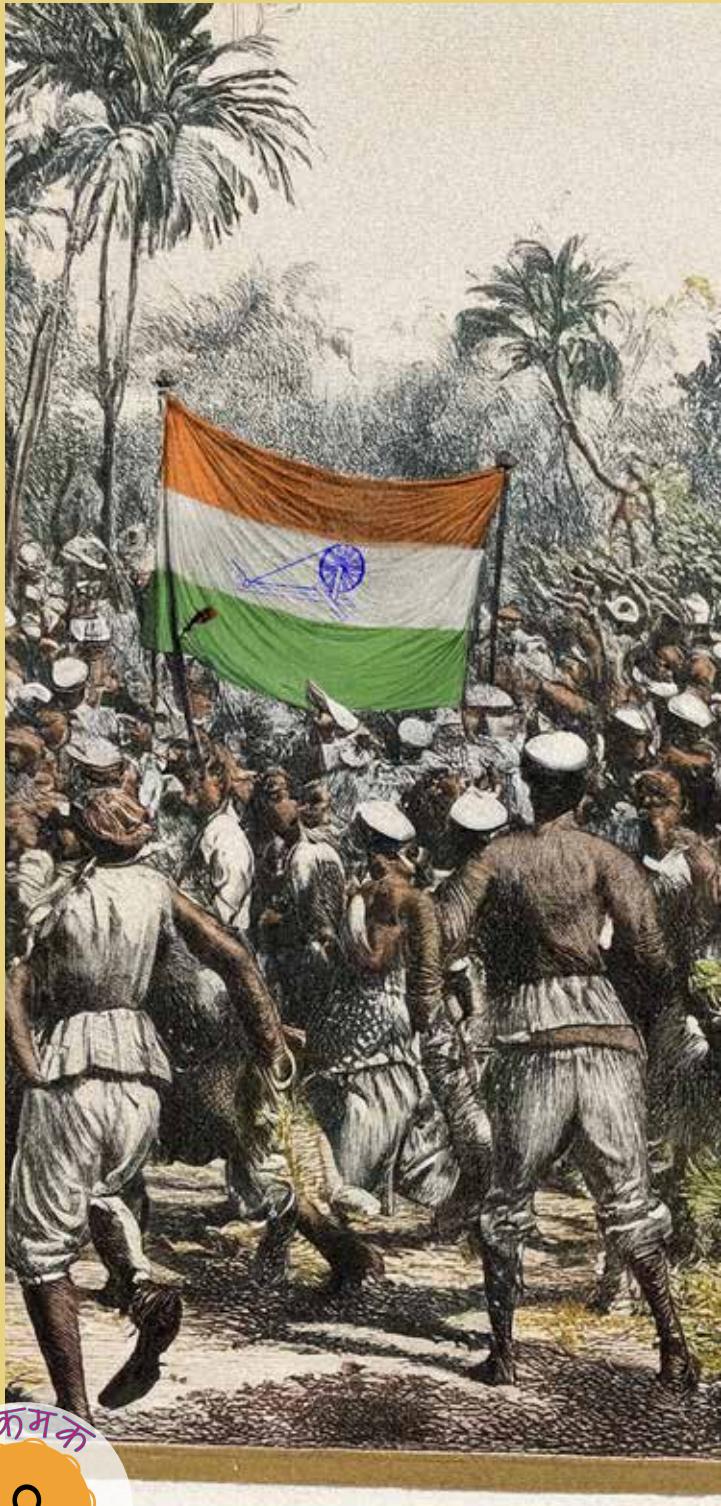
7

मार्च 2025

एक विद्रोह रेसा भी...

सी एन सुब्रह्मण्यम्

बंजारी ढाल का सत्याग्रह



“बंजारी ढाल को याद करो!”

बैतूल ज़िले के किसी भी आदिवासी जुलूस में तुम इस नारे को सुन सकते हो। ज़िले के आदिवासियों की वीरगाथा में बंजारी ढाल का नाम दर्ज है। यह उस जगह का नाम है जहाँ हज़ारों आदिवासियों ने अँग्रेजों की पुलिस का सामना करते हुए अपना हक जताया था। तुम सोच रहे होगे कि कौन-से हक, किस तरह के हक की बात हो रही है।

बात दरअसल यह थी कि आदिवासी सदियों से जंगलों में रहते आए हैं और उसका उपयोग करते रहे हैं। जंगल के कुछ हिस्से में खेती करना, कुछ हिस्से में गाय-भैंस, बकरी चराना, शिकार करना, वनोपज जैसे लकड़ी, महुआ, जड़ीबूटी आदि इकट्ठा करके बेचना उनके जीवन का प्रमुख हिस्सा है। पर अँग्रेज वनों को या तो खेतों में बदलना चाहते थे ताकि उन्हें लगान मिले, या फिर जंगलों को खुद के व्यापार के लिए उपयोग करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने आदिवासियों के जंगलों में आने-जाने पर रोक लगा दी। अगर जानवर चराना है तो पैसे देकर पास बनवाना पड़ता था। शिकार की तो बिलकुल अनुमति नहीं थी। यहाँ तक कि जंगल के किसी भी प्रकार के उपयोग को जुर्म घोषित करके सभी आदिवासियों को गुनहगार बना दिया गया था। तो आदिवासी जंगलों पर अपना पारम्परिक हक जता रहे थे। वे वहाँ आने-जाने, पशुओं को चराने, शिकार करने, लकड़ी काटने, वनोपज इकट्ठा करने और वहाँ अपने तरीके से खेती करने की माँग कर रहे थे।

1930 में स्वतंत्रता आन्दोलन अपने चरम पर था। उस समय गांधी जी ने यह सन्देश दिया था कि देश के लोग अँग्रेजी सरकार के अनुचित नियमों को तोड़कर अपना विरोध दर्ज करें। इसके लिए उन्होंने नमक कानून को तोड़ने की बात की थी। उन दिनों आम लोगों द्वारा नमक बनाने पर पाबन्दी थी और

सरकार के ठेकेदार ही नमक बनाकर बेच सकते थे। ऐसे में नमक जैसी रोज़मर्रा के उपयोग की चीज़ महँगी होती गई। गांधी जी ने खुद दाढ़ी में नमक कानून तोड़कर आन्दोलन को शुरू किया था। पूरे देश में यह आन्दोलन फैल गया और स्थिति अँग्रेज़ों के नियंत्रण के बाहर जाती रही।

नमक बनाने के लिए खारे पानी की ज़रूरत होती है। पर वो तो समुद्र के किनारे ही मिलता है। ऐसे में बाकी जगह के लोग क्या करें? जंगलों में रहने वाले आदिवासी क्या करें? उन्होंने खुद अपना रास्ता निकाला... उन्होंने तय किया कि वे उन कानूनों को तोड़ेंगे जिन्होंने आदिवासियों के रोज़मर्रा के जीवन को परेशानी में डाल रखा था। वे जंगलों में खुलकर जानवर चराएँगे, पेड़ काटेंगे, वनोपज इकट्ठा करेंगे। वे ऐसा करने भी लगे। वन विभाग के अफसर अपनी रिपोर्टों में लिखने लगे कि अचानक वन कानूनों के उल्लंघन की वारदातें बढ़ती जा रही हैं। 1929 में इनकी संख्या 300 से कम थी और 1930 में यह चार गुना यानी 1200 से भी अधिक हो गई। बिना अनुमति के चराई करने और पेड़ काटने की वारदातें भी दुगुनी हो गई।

जब आदिवासियों ने स्वतंत्र रूप से आन्दोलन शुरू कर दिए तो राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता भी सक्रिय हुए। उनमें से ज्यादातर ज़िले के मालगुज़ार¹ और व्यापारी थे, जो ऊँची जातियों के थे। इन नेताओं में प्रमुख थे सेठ दीपचन्द गोठी। वे गांधी जी से अनुमति माँगने गए कि जंगलों में नमक सत्याग्रह कैसे करें। गांधी जी और जवाहरलाल नेहरू तब तक गिरफ्तार हो चुके थे। बड़े नेताओं में सिर्फ मोतीलाल नेहरू बचे थे। उन्होंने सारी बात सुनकर अनुमति दी कि जंगलों में घास काटने जा सकते हैं। मगर पेड़ नहीं काटना है, न ही किसी वन कर्मचारी पर हाथ उठाना है। नेताओं ने आदिवासियों

¹ मुख्यतः वे ज़र्मीदार जो किसानों, आदिवासियों से लगान वसूलकर अँग्रेज़ सरकार को देते थे और खुद को उन गाँवों के मालिक समझते थे।

को यह समझाने के लिए कई सभाएँ कीं। मगर आदिवासी इस निर्णय से सहमत नहीं हुए। वे तो मौका मिलते ही पेड़ काटना चाहते थे। साथ ही अपने ऊपर हमला करने वाले पुलिस या वन कर्मचारी को मारकर भगा देना चाहते थे। तीन हज़ार से अधिक आदिवासी जुलाई महीने में हँसिया, फरसा आदि लेकर बैतूल पहुँचे। वे कांग्रेस के नेताओं को यह बताना चाहते थे कि वे आन्दोलन के लिए तैयार हैं। फिर अगस्त की पहली तारीख को वे और बड़ी तादाद में बैतूल पहुँचे और गोठी जी से आन्दोलन शुरू करने का आग्रह किया।

स्थिति को देखते हुए गोठी जी ने तय किया कि वे खुद एक दल के साथ जंगल में जाकर घास काटकर लाएँगे। उनके साथ लगभग 5000 गोंड व कोरकू आदिवासी आए और घास काटी। देखते-देखते कई गाँवों में लोगों ने खुद से जंगल में जाकर घास काटना, पेड़ काटना, जंगल जलाना आदि शुरू कर दिया। अगर वन विभाग के कर्मचारी उन्हें रोकने आते तो वे उन्हें मार भगाते। इस बीच गोठी जी और कई नेता गिरफ्तार हो गए। गोठी जी 90 से अधिक गाँव के मालगुज़ार थे। उन सब गाँवों के लोग खुद तो आन्दोलन में शामिल हुए ही और आसपास के गाँवों को भी शामिल किया। अब हर आदिवासी गाँव खुद से तय करने लगा कि वो इस आन्दोलन को कैसे आगे बढ़ाएगा। जगह-जगह जंगल में आग लगा दी गई, पेड़ काटे गए, जानवर चराए गए और घास काटी जाने लगी। कई आदिवासी नेताओं को गिरफ्तार करने के आदेश दिए गए। पुलिस दल गाँव-गाँव में उन्हें ढूँढ़ने जाने लगा। मगर वे जहाँ भी गए आदिवासियों ने बलपूर्वक उन्हें रोका और मार भगाया।

ऐसी ही एक घटना बंजारी ढाल में हुई। 22 अगस्त 1930 को वहाँ पुलिस दल एक आदिवासी नेता गंजन सिंह को गिरफ्तार करने पहुँचा। हज़ार से अधिक आदिवासी हँसिया, कुल्हाड़ी, भाला,

बरछी लेकर वहाँ पहले से ही इकट्ठा हुए थे। उन्होंने पुलिस दल पर हमला बोला और एक सिपाही को मार डाला। अगले दिन ज़िले के पुलिस निरीक्षक (एस पी) के नेतृत्व में एक दल वहाँ पहुँचा तो आदिवासी उसे भी घेरकर हमला करने लगे। विकट स्थिति पैदा होने पर पुलिस ने गोली चलाई और कहा जाता है कि कम से कम दो आदिवासी शहीद हुए और सैकड़ों घायल हुए। अगले महीने सितम्बर की 10 तारीख को फिर से बंजारी ढाल में हजारों आदिवासी अपने हथियार सहित इकट्ठा हुए और शाहपुर के रास्ते बैतूल के लिए निकल पड़े। उन्हें बीच रास्ते में आमला में रोक लिया गया।

अगले कुछ दिनों में अलग-अलग जगहों पर गिरफ्तार किए गए आदिवासियों को छुड़ाने के लिए पुलिस पर हमला होने लगा। इस बीच ज़िले की शालाओं के शिक्षक अपने छात्रों को आन्दोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित करने लगे और

स्कूलों में अँग्रेजी राज के खिलाफ प्रचार होने लगा। इन सब घटनाओं को ध्यान में रखते हुए ज़िले की सरकार ने पूरे ज़िले को अशान्त क्षेत्र घोषित कर दिया। और स्कूलों की ज़िला स्तरीय चयनित काउंसिल को भंग कर दिया।

इस बीच इस तरह का जंगल सत्याग्रह महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के कई आदिवासी ज़िलों में भी फैल गया। सरकार ने पहले तो आक्रामक रवैया अपनाया और दमन का रास्ता चुना। इसके बाद एक आयोग गठित किया गया जिसे आदिवासियों की समस्याओं पर विचार करना था। लेकिन इस समिति की रिपोर्ट जो बन रही थी वह सरकार के लिए इतनी घातक थी कि सरकार ने उस समिति को ही भंग कर दिया। आदिवासियों की समस्याओं का कोई समुचित समाधान नहीं हो पाया और वे पूरी तरह से अँग्रेज सरकार के खिलाफ होते गए।



फॉर्म-4 (नियम-8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी

प्रकाशन का स्थान : भोपाल

प्रकाशन की अवधि : मासिक

प्रकाशक का नाम : राजेश खिंदरी

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य फाउंडेशन

जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास

भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

मुद्रक का नाम : राजेश खिंदरी

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य फाउंडेशन,

जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास

भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

सम्पादक का नाम : विनता विश्वनाथन

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य फाउंडेशन

जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास

भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

उन व्यक्तियों के नाम

जिनका स्वामित्व है : रैक्स डी. रोजारियो

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य फाउंडेशन

जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास

भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

मैं राजेश खिंदरी यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(प्रकाशक के हस्ताक्षर) राजेश खिंदरी 25 फरवरी 2025

“बन्दर आ गए!”

यह सुनते-देखते ही कोई अपने घर की तरफ भागता है, तो कोई छत पर। तो कोई दरवाजे में ताला लगाने के लिए दौड़ पड़ता है। सभी जानते हैं कि इनसे कपड़े तो क्या, चप्पल तक नहीं बचने वाली। सबका सत्यानाश तय है।

रोज़ की तरह आज भी बन्दर सुभाष कैम्प में आया हुआ है। वह भी अपने झुण्ड के साथ। उनके आते ही लोगों के घरों में घुसने, परेशान होने, छतों और गलियों में भागने से अफरातफरी मचनी शुरू हो गई थी। एक बन्दर अपने बच्चों के साथ जाकर पानी की मोटर से पाइप निकालकर पानी पीने लगा। गली में खेलते बच्चों ने इस बन्दर को देखा तो चिल्लाना शुरू कर दिया, “बन्दर आ गए। बन्दर आ गए!”

इतने में ज़रीना बाजी जीने से उतरकर नीचे आई और देखा कि बन्दर मोटर का पाइप निकालकर पानी पी रहा है। उन्होंने बगल में रखे प्लास्टिक के एक लम्बे पाइप को उठाया और जीने पर खड़े होकर ही उसे बन्दरों की ओर फेंककर उन्हें भगाने की कोशिश करने लगी। तब भी बन्दर वहाँ से टस से मस नहीं हुआ, बल्कि ज़रीना बाजी को ही घूरने लगा। यह देख वह ऊपर की ओर भागी। मोटर के तार को उसने तोड़ दिया। पानी बन्द होने के कुछ देर बाद बन्दर खुद ही चला गया।

इस गली में शोर मचाने के बाद सब बन्दर दर्जी वाली गली की ओर जाने लगे। दुकान के ठीक सामने वाले घर से रुखसार के चीखने की आवाज़ आई। वह शायद छत से आ रही थी। लोग उसके आसपास इकट्ठा हो गए। उनकी बातों से पता चला कि दो मोटे-मोटे बन्दर बिना आवाज़ किए टंकी के ढक्कन को खोलकर अपने बच्चों के हाथ पकड़कर टंकी में ढूब-ढूबकर नहा रहे थे।

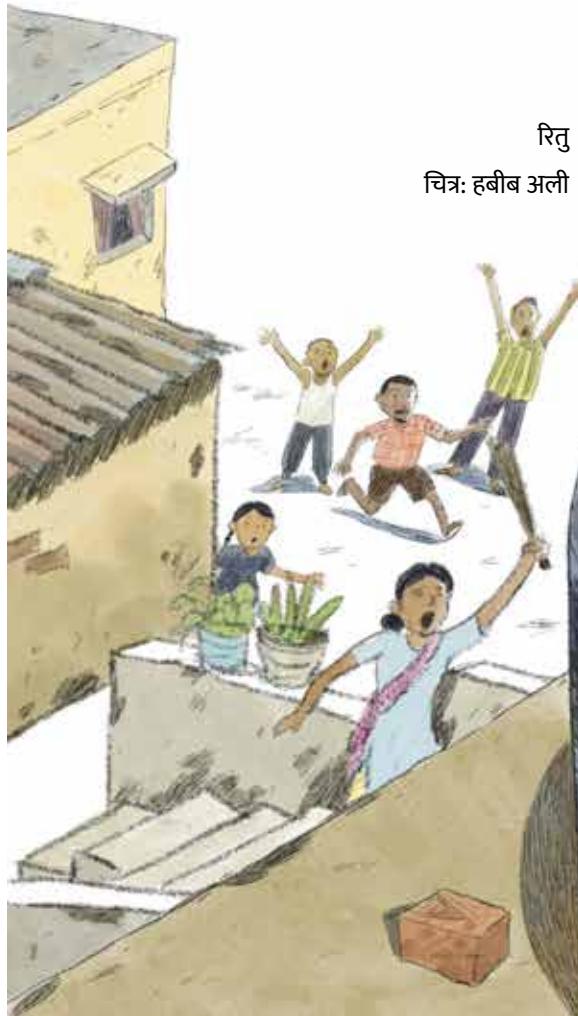
रितु
चित्र: हबीब अली

बन्दरों के बीच जीवन

नए
पते



क्रमक्र
11
मार्च 2025





जब तक ये खबर गली में पहुँचती तब तक बन्दरों ने अपना काम तमाम कर डाला था। पूरी टंकी का पानी गन्दा कर वे धूप खाने के लिए खुले में बैठे हुए थे। इस बात पर लोग सिर्फ हैरान ही नहीं हुए, हँसने भी लगे।

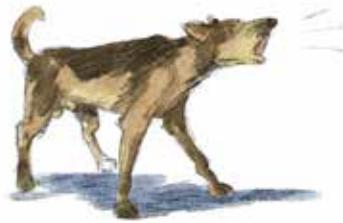
बन्दरों की हरकतें अब लोगों के लिए आम बात हो चुकी हैं। असल में सुभाष कैम्प के ठीक पीछे जंगल है। वहाँ से बन्दरों का आना-जाना लगा ही रहता है। वहाँ से कभी साँप, कभी नेवले, कभी जंगली कीड़े, कभी भयंकर किस्म के मच्छर, कभी चील तो कभी-कभी उल्लू तक चले आते हैं। सभी जानवरों को लेकर तो नहीं, लेकिन इनमें से कुछ को लेकर सुभाष कैम्प में अलग-अलग धारणाएँ बनी हुई हैं। जैसे साँप दिख जाए तो भोले भगवान, चूहे दिख जाएँ तो मोदक वाले गणेश, उल्लू दिख जाएँ तो काला जादू और बन्दर दिख जाएँ तो खतरा ही खतरा।

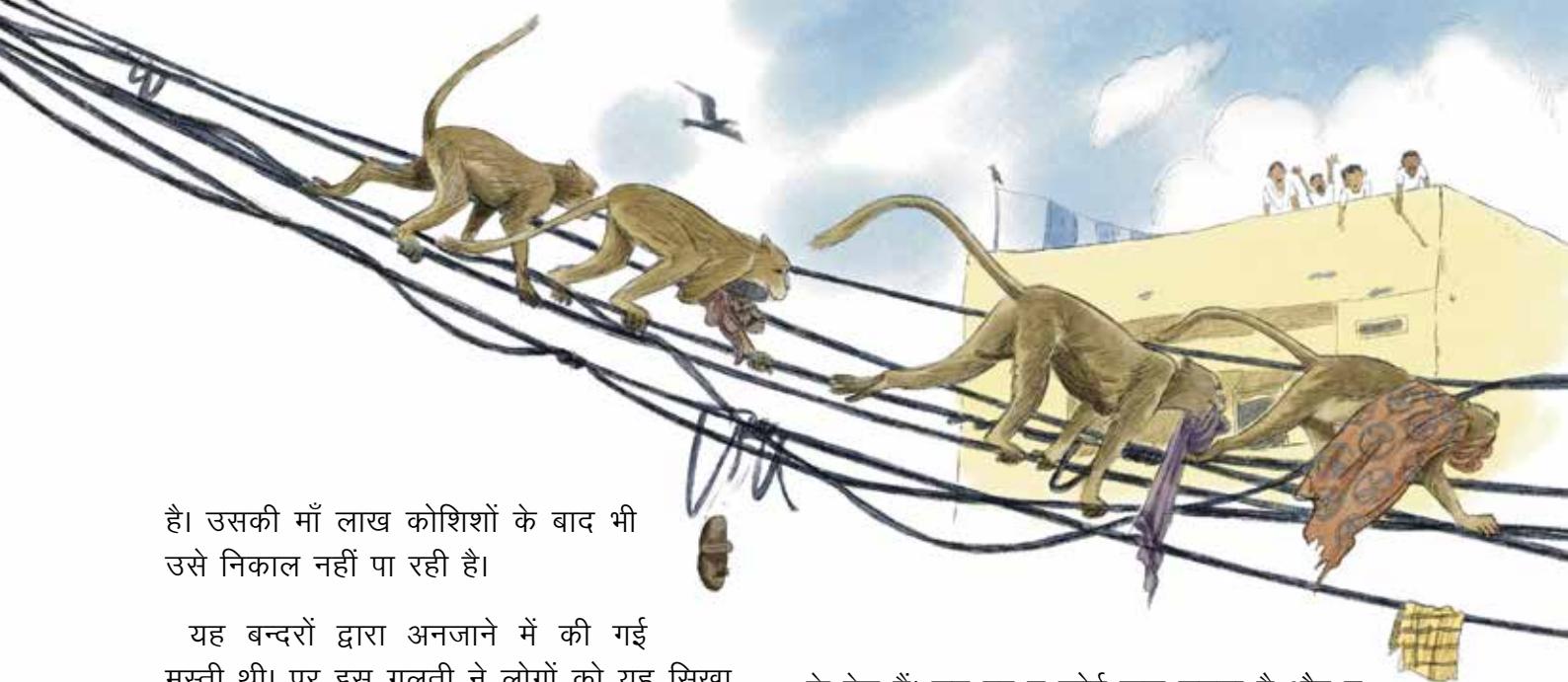
सुभाष कैम्प में सबसे ज्यादा उत्पात बन्दर ही मचाते हैं। वे सुभाष कैम्प में कभी-कभी चक्कर लगाने नहीं आते, बल्कि रोज चले आते हैं। इन्सानों से ज्यादा बन्दरों को सुभाष कैम्प की गिलियों की पहचान है। वे कभी एक-एक कर नहीं आते। उनका पूरा झुण्ड एक साथ आता है ताकि कोई उन्हें हाथ भी नहीं लगा सकें। जब बन्दर बच्चों के सामने आते हैं तो पता ही नहीं चलता कि बच्चे

बन्दरों का मनोरंजन कर रहे हैं या फिर बन्दर बच्चों का। औरतों के लिए तो ये बन्दर किसी मुसीबत से कम नहीं हैं। मगर बच्चों के लिए वे दोस्त की तरह हैं। बच्चे बन्दरों से डरते नहीं, बल्कि दोनों की जुगलबन्दी चलती है। कभी बन्दर बच्चों पर हावी होते हैं तो कभी बच्चे बन्दरों पर। बच्चों की टोली बन्दरों के पीछे-पीछे ऐसे घूमती है जैसे उनका इन्तजार कर रही हो। बच्चों से मिलने के बाद बन्दरों का हमला घरों के किचन, फ्रिज और टंकी पर होता है। बिना सोचे-समझे वे किसी भी घर में घुस जाते हैं। बस्ती में बन्दरों के दिखाई देते ही हल्ला मच जाता है।

आज ही की बात है। सिमरन का छोटा भाई यह कहते हुए भागा, “अरे! देखो भाई की बाइक पर बन्दर बैठा है।” यह सुन वहाँ खड़े उसके बाकी दोस्त भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े। देखा तो सच में बाइकों पर आज लड़कों की जगह बन्दर बैठे हुए थे। कुछ बन्दर सोच रहे थे, तो कुछ केले खा रहे थे। कुछ तो बैठकर सामने की दुकान से उठाई गई चीज़ खा रहे थे। उन बच्चों के साथ जाह्नवी भी थी जो कि सुभाष कैम्प में ही रहती है। जाह्नवी ने गौर किया कि बन्दर चीज़ के पैकेट को अपने हाथों से फाड़ रहा है। जाह्नवी ने बच्चों को चीज़ खाते हुए तो बहुत बार देखा था। लेकिन बन्दरों को चीज़ खाते हुए पहली बार देख रही थी। वह भी पैकेट को फाड़कर, ना कि नोंचकर।

अब तो बस्ती में इन बातों और इनकी छोटी कहानियों की गँज अक्सर बनी रहती है। कोई बता रहा था कि किसी एक बन्दर ने घर के नल को खोल दिया था जो सीधा टैंक से जुड़ा हुआ था। उसकी वजह से पूरी टंकी का पानी बह गया। किसी और ने बताया कि टंकी पर ढक्कन ना होने की वजह से एक बन्दर का बच्चा उसमें फँस गया





है। उसकी माँ लाख कोशिशों के बाद भी उसे निकाल नहीं पा रही है।

यह बन्दरों द्वारा अनजाने में की गई मर्स्ती थी। पर इस गलती ने लोगों को यह सिखा दिया कि टंकी पर ढक्कन रखना ज़रुरी है। इससे मच्छरों के पैदा होने की सम्भावना भी कम हो जाती है। इन्सानों की बस्तियों में जानवर का आना इतना आम हो गया है कि कुछ दिन अगर ये ना आएँ तो लोग इन्हें याद करने लगते हैं।

जब प्रिया दूसरी क्लास में थी तो सुभाष कैम्प में बन्दरों का नामोनिशान तक नहीं था। लेकिन अब जब वह आठवीं क्लास में है तो हर रोज़ बन्दर बस्ती में दिख ही जाते हैं। पहले जब गाँव जाना होता था तो रास्ते में बन्दर दिखाई पड़ते थे। बच्चे उनकी तरफ इशारा करके कहते, “वो देखो, बन्दर!” लेकिन अब जहाँ देखो, वहीं बन्दर नज़र आते हैं। बन्दरों का दिखना अब आम बात हो गई है। चूँकि सुभाष कैम्प जंगल से बिलकुल सटा हुआ है। इसलिए जिनका घर जंगल की तरफ है वो कूड़ा उसी तरफ फेंक आते हैं। वे ऐसा यह सोचकर करते हैं कि दूर ना जाना पड़े। पूरे साल कूड़ा वहीं पर पड़ा रहता है और गलकर सड़ जाता है।

शहरों में जंगल की सफाई नहीं होती। कुछ लोग सर्दियाँ आते ही पेड़ों की लकड़ियाँ चुपके-से तोड़ लाते हैं। उसे जलाकर वो सर्दी से बचने की कोशिश करते हैं या उन्हें बेचकर अपने परिवार का खर्च चलाते हैं। वैसे तो इस जंगल में ज्यादातर कीकर

के पेड़ हैं। उन पर न कोई फल उगता है और न ही वो भरपूर छाया देने के काम आते हैं। पर जंगल में कुछ पेड़ ऐसे भी हैं जिनमें फल उगते हैं, जैसे कि जामुन, आम, इमली। गर्मियों के मौसम में उन पर बैठकर बन्दर थोड़ा आराम कर लेते हैं। उनके फलों को खाकर अपना पेट भर लेते हैं। पर उन फलों को भी अब बच्चों ने तोड़ना शुरू कर दिया है। इस वजह से जंगल में बन्दर या बाकी जानवरों के लिए ऐसा कुछ खास बचा नहीं, जिससे वे अपना या परिवार का पेट भर सकें। इसलिए उन्हें खाने की तलाश में जंगल से बाहर निकलना ही पड़ता है।

इधर मानो बन्दरों ने सुभाष कैम्प में आने का टाइम तय कर रखा है। वो अक्सर शाम के वक्त ही बस्ती में आते हैं। क्योंकि शाम के वक्त लोग घर से बाहर आकर एक-दूसरे से बातचीत करने लग जाते हैं और घर खुला व खाली रहता है। लेकिन बन्दर अपनी-अपनी जगह से सुबह ही निकल जाते हैं। कोई रोड पर, कोई पार्क में तो कोई किसी गली के अन्त में जाकर समय बिता रहे होते हैं। शाम होते ही वे सुभाष कैम्प में दाखिल हो जाते हैं।

सुभाष कैम्प बन्दरों की और बन्दर सुभाष कैम्प की ज़िन्दगी का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं।

रितु को अंकुर किताबघर से जुड़े हुए लगभग छह साल हो गए हैं। वह दक्षिणपुरी की सुभाष कैम्प बस्ती में रहती हैं और राजकीय उच्चाम माध्यमिक कन्या विद्यालय में पढ़ती हैं। दूसरों के अनुभव सुनना उन्हें बेहद पसन्द है।



मकमक

13

मार्च 2025



क्यों-क्यों मैं इस बार का हमारा सवाल था:

तुमने शायद ध्यान दिया हो कि हमारे आसपास, टीवी, विज्ञापन, किताबों, होर्डिंग आदि में गोरे लोगों को ज्यादा दिखाया जाता है। तुम्हें क्या लगता है, ऐसा क्यों है?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे
इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:
अक्सर बच्चों पर हाथ उठाना लोगों के
लिए आसान होता है। क्यों?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें
भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक
बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.in पर
ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर
हॉटसेप भी कर सकते हो। चाहे तो डाक से भी
भेज सकते हो। हमारा पता है:

ଘରମକ

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्म्यून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

शान्ति पाल, आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

टीवी, विज्ञापन, किताबों, होर्डिंग आदि में गोरे लोग ज्यादा दिखाई देते हैं क्योंकि वह खूबसूरत होते हैं। यदि काले लोगों को दिखाएँगे तो उनके विज्ञापन अच्छे नहीं लगेंगे और विज्ञापन ज्यादा कोई नहीं देखेगा। इसलिए गोरे लोगों को ज्यादा दिखाया जाता है कि सब लोग देखें।

निशान्त कुमार, सातवीं, अपना स्कूल, फत्तेपुरा सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

क्योंकि गोरे लोगों की तस्वीरें लगाने से किसी भी चीज़ का प्रचार अच्छा होता है।

जानिस्ता, खरखड़ी पेस सेंटर, निरन्तर संस्था, दिल्ली

मेरा रंग काला है। वो मुझे अच्छा लगता है। पर लोग हमेशा कुछ न कुछ कमी निकालते रहते हैं। जैसे मैं कुछ खास रंग के कपड़े पहनती हूँ तो लोग कहते हैं कि ये रंग तुम पर कुछ कम अच्छा लग रहा है। अगर तुम्हारा रंग कुछ साफ होता तो ये कपड़े तुम पर अच्छे लगते। पर लोग ये कभी नहीं कहते कि तुम अच्छी लग रही हो। इस वजह से मुझे कभी-कभी खुद पर रोना भी आता है कि लोग रंग-रूप ही देखते हैं। दिल नहीं देखते। लोगों को इन्सान का व्यवहार देखना चाहिए। रंग मायने नहीं रखता।

आरनी लकडा, चौथी, शासकीय कन्या आश्रमशाला, देवगढ, सरगुजा, छत्तीसगढ

गोरे लोग अच्छे दिखते हैं। इसलिए गोरे लोगों को कम्पनी वाले पसन्द करते हैं। वे काले लोगों को भगा देते हैं। और देखनेवाले भी गोरे लोगों को ही देखना चाहते हैं।

इसका कारण है हमारे समाज की सोच जो आज भी किसी व्यक्ति की सुन्दरता का मानक रंग को मानती है। यह सोच हमारे समाज में इसलिए आई कि हम लगभग 200 सालों तक अँग्रेजों के गुलाम रहे। इसलिए हम लोगों को मानसिकता हो गई कि सफेद रंग के व्यक्ति सुन्दर और गुणी होते हैं। आजाद होने के बाद भी हम इस मानसिकता से नहीं निकल पाए।

कृति गुप्ता, चौथी, पलाश, जिंगल बेल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

जब भी मैं कार्टून देखती हूँ तो उसमें विज्ञापन आते हैं। तब मेरे मन में अक्सर यह बात आती है कि विज्ञापन में गोरे लोग ही क्यों आते हैं। शायद इसलिए कि वे आकर्षक होते हैं। या फिर सरकार ने ये नियम कभी बनाया होगा। जब मैंने अपनी बड़ी बहन से पूछा तो उसने कहा कि अगर कोई काला व्यक्ति विज्ञापन करेगा तो सब लोग यही कहेंगे कि यह क्रीम या साबुन लगाने से मैं उसकी तरह ही काला हो जाऊँगा।

जायरा आस्था, सातवीं, पाथवेज स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

गोरे लोगों को ज्यादा दिखाया जाता है क्योंकि वे लोग ज्यादा अमीर लगते हैं। इस वजह से बाकी लोगों को लगता है कि अमीर लोग उस ब्रांड की चीजों को खरीदते हैं और फिर बाकी लोग भी उस चीज़ को खरीदने लगते हैं।

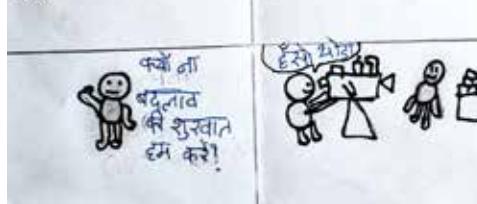
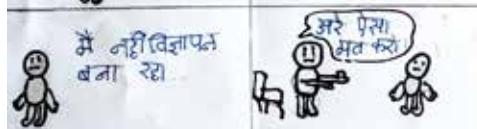
रबनूर कौर चावला, पाँवचीं, शिव नाड़र स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग सोचते हैं कि गोरे लोग आकर्षक हैं। और अगर वे गोरे लोगों को दिखाते हैं तो अधिक लोग उन्हें देखते हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसा नहीं सोचता। सच्ची सुन्दरता दिल से आती है। और हर कोई अपने तरीके से सुन्दर और आकर्षक होता है।

क्यों क्यों के लिए
तुमने सुन्दर शायद ध्यान दिया हो कि हमारे माझपान
हिस्से, विज्ञापन, किताबें, होड़ींग आदि में गोरे
लोगों को सुन्दर दिखाया। जल है तुम्हे क्या लगता है?
पूछा क्यों?
क्यों - सुन्दर भविष्य आडकन कहा - हमें
पहलशाना - कमज़ोन (निज़ीकर बाल मनन)



चित्र: मुकुन्द महेश आडकर,
छठवीं, कमला निम्बकर
बाल भवन, फलटण, सतारा,
महाराष्ट्र



क्या सुन्दरता मतलब सिर्फ गोरा रंग है?

भारत लगभग 200 सालों तक ब्रिटिश हुकूमत के अधीन रहा। गोरे ब्रिटिश अधिकारी हमारे देश पर शासन करते थे और भारतीयों को अपने से कमतर समझते थे। यह मानसिकता धीरे-धीरे भारतीय समाज में गहराई से बैठ गई और आज भी बनी हुई है।

बॉलीवुड और टीवी में दशकों से गोरेपन को सुन्दरता का आदर्श माना गया है। यदि हम पुराने हिन्दी सिनेमा को देखें, तो पाएँगे कि अधिकतर अभिनेत्रियाँ गोरी थीं। या फिर जिनका रंग साँवला था, उन्हें मेकअप के ज़रिए गोरा बना दिया गया। यह सिर्फ महिलाओं तक सीमित नहीं था। पुरुषों के लिए भी गोरापन ‘हीरो’ का लक्षण माना गया।

बाजार में सुन्दरता की परिभाषा को नियंत्रित करने की ताकत विज्ञापन कम्पनियों के हाथों में होती है। उन्होंने यह धारणा बना दी कि गोरी त्वचा ही सफलता और आत्मविश्वास का प्रतीक है। 1975 में भारत में ‘फेयर एंड लवली’ नाम की पहली फेयरनेस क्रीम लॉन्च हुई।

इसका प्रचार यह दिखाकर किया गया कि एक साँवली लड़की को ज़िन्दगी में कोई अवसर नहीं मिलता, लेकिन जैसे ही वह ये क्रीम लगाकर गोरी हो जाती है, उसे नौकरी, सम्मान और सफलता मिलने लगती है।

यह सोच इतनी गहरी बैठ गई कि सालों तक कई बड़े सितारे गोरी बनाने वाली इन क्रीमों का प्रचार करते रहे। हालाँकि, जब समाज में इसका विरोध बढ़ा, तो 2020 में ‘फेयर एंड लवली’ ने अपना नाम बदलकर ‘ग्लो एंड लवली’ कर दिया। लेकिन उत्पाद की सोच वही रही। भारत में गोरी त्वचा को सिर्फ सुन्दरता ही नहीं, बल्कि सफलता से भी जोड़ा जाता है। कई शोध बताते हैं कि गोरे लोगों को इंटरव्यू में ज्यादा मौके मिलते हैं, जबकि साँवले लोगों को अक्सर रिजेक्ट कर दिया जाता है।

समाज को अब यह समझना होगा कि हर रंग की अपनी खूबसूरती होती है। आत्मसम्मान और आत्मविश्वास से भरी त्वचा वाला व्यक्ति ही सबसे सुन्दर होता है, चाहे वह किसी भी रंग का क्यों न हो!

वेदांश शक्ला, सातवीं, के के एकेडमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

क्योंकि लोगों को लगता है कि गोरे लोग अधिक सुन्दर दिखते हैं और काले लोग नीचे दर्जे के होते हैं। लेकिन ऐसा है नहीं। ऐसा लोग शायद इसलिए सोचते हैं कि गोरे लोगों के ऊपर हर रंग के कपड़े जँचते हैं। लेकिन काले लोग किसी रंग के कपड़े में अच्छे नहीं लगते हैं। अगर उन्हें काले कपड़े पहना दें तो सब उन्हें भूत कहेंगे। सफेद कपड़े पहना दें तो वेटर कहेंगे। तो शायद यह कारण हो सकता है कि लोग काले-गोरे में भेद करते हैं। सिनेमा में जो गोरी अभिनेत्रियों को दिखाते हैं उसका भी प्रभाव समाज पर पड़ता है।

संजना, आठवीं, शासकी पूर्व माध्यमिक शाला, परसा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

मुझे लगता है कि लोग ऐसा इसलिए करते हैं कि गोरे और खूबसूरत लोगों को देखकर लोग एकदम से आकर्षित हो जाते हैं। और ज्यादातर लोग खूबसूरत लोगों को पसन्द करते हैं। पर मेरे हिसाब से ऐसा करना ठीक नहीं है। क्योंकि जो जैसा दिखाई देता है, वह वैसा रहता नहीं है।

शरन्या हरीचन्द्रन, छठवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

इसके कई कारण हो सकते हैं। जैसे कि उन्हें लगता होगा कि गोरे लोगों द्वारा विज्ञापनों को ज्यादा आकर्षक व मनोरंजनपूर्ण बनाया जा सकता है। इन्हीं लोगों से प्रभावित होकर उपभोक्ता या दर्शक उत्पाद को खरीद लें, चाहे वह सामान उपयोगी हो या न हो। इसलिए विज्ञापनों को नया रूप देकर हम ऐसे समाज की ओर बढ़ सकते हैं जो न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध हो, बल्कि हर नागरिक को समानता की ओर बढ़ा सके।



चकमक पात्रका

मैं काले रंग के कारण
जहाँ में सभी मुझे नहीं
मार्ग हैं मैं भी मीराइल पर इना
खेली लेती हूँ विडियो बनाती
इस मुझे मैं लाखों भी नहीं
कहा है। मुझे काली मैंत
कहने मुझे के लड़के
मिडाई है।



मैं धार में राज करती
हूँ सभी सुख गोरी पुक्कुनी
बुलाते हैं और प्यार मी
करते हैं। मुझे मोवार्टल में
बहुत कर्मेंट आए हैं लहू
और सलकाइज मी बहुत अप्पे
हैं। मेरा पोस्टर में भी
फोड़ी हप्पामा है आगे
मुझे बिलम में भरी
बिलने जा चास वै!

चित्रः निरन्तर संस्था, दिल्ली से प्राप्त।

साकेत रंजन, सातवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

मेरे हिसाब से विज्ञापन और मीडिया में गोरे लोगों को ज्यादा दिखाने के 4 मुख्य कारण ये हैं—

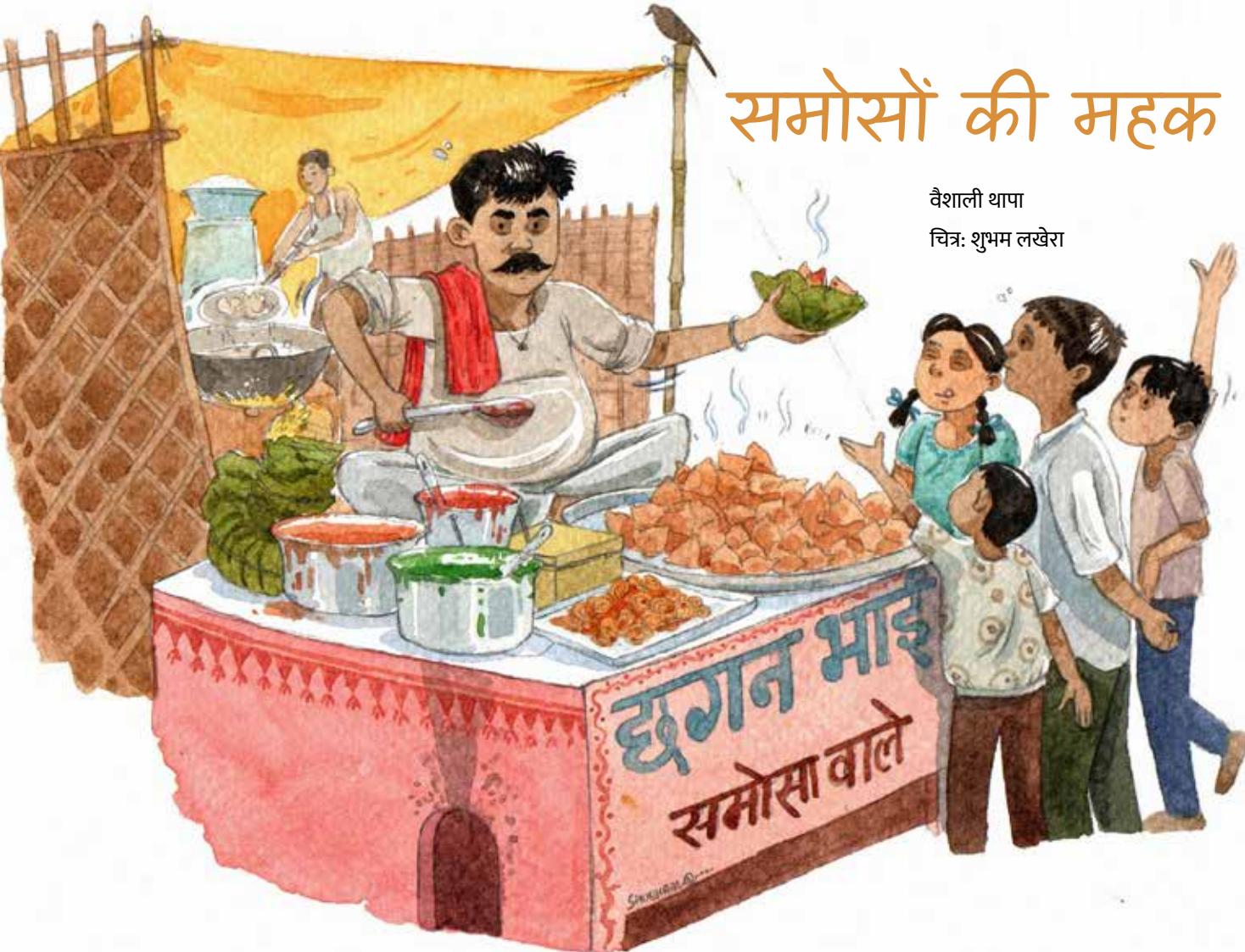
1. समाज की मानसिकता: गोरी त्वचा को सुन्दरता और आकर्षण के साथ जोड़ा जाता है।
 2. लोगों पर प्रभाव: विज्ञापन कम्पनियाँ गोरे मॉडल्स का उपयोग आकर्षक और उच्च-स्तरीय उत्पादों को दिखाने के लिए करती हैं।
 3. पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव: भारत में पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है, जिसमें गोरी त्वचा को अक्सर आदर्श माना जाता है।
 4. मीडिया: मीडिया अक्सर गोरे लोगों को अधिक प्रदर्शित करता है, जिससे यह धारणा बनती है कि गोरी त्वचा ही सुन्दरता का प्रतीक है।

चित्रः रजनी कमार, सातवीं, ग्राम नारायणपुर, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

समोसों की महक

वैशाली थापा

चित्र: शुभम लखेरा



सरकारी स्कूल की बड़ी-बड़ी, भद्री व मटमैली दीवारें, मैदान सरीखे विशाल कमरे और बदबू से भरे शौचालय गरीब परिवार में पैदा होने के सच को बार-बार उसके सामने लाते थे। बस एक ही जगह थी वहाँ जो उसे थोड़ा सुख देती थी। वह थी स्कूल की छोटी-सी कैंटीन। पीपल के पेड़ के नीचे बनी उस छोटी-सी कैंटीन में एक भट्टी, एक ठेला और काँच की कुछ बरनियाँ थीं। नाश्ते के नाम पर वहाँ बस समोसा ही मिलता था। सिर्फ पाँच रुपए में एक करारा, खस्ता समोसा अपने तीन पंखों के साथ किसी सुनहरी तितली की तरह हाथ में आकर बैठ जाया करता था। और हरी चटनी में खेत की ताज़गी महकती थी। बारिश और सर्दी में समोसों की महक हर कक्षा में पहुँचकर पढ़ाई से बच्चों का मन भटकाती थी।

एक बड़े समुद्र में समोसे कभी डूबते, कभी तैरते। जब वह सुनहरे, कुरकुरे हो जाते तो उन्हें समुद्र से अलग कर दिया जाता। समोसों को चटपटी चाट में तब्दील भी किया जाता था। उन्हें सबसे पहले चीनी मिट्टी से बने प्याले में तोड़ा जाता। उन आधे टूटे समोसों के भीतर से आलू झाँकने लगता और गरम धुआँ ऊपर उठकर समोसों के ताजे होने की गवाही देता। फिर उसमें हरी चटनी, मीठी चटनी, बारीक कटा प्याज़, ताज़ा-ताज़ा दही और चटपटे छोले-मटर डाल दिए जाते। छोले-मटर चाट में किसी तिलिस्म की तरह काम

करते थे। चाट को फुर्ती से सजाकर बच्चों के सामने पेश करने का हुनर ऐसा गजब था कि लगता था इसकी भी कोई कार्यशाला हो सकती है। उस चाट का स्वाद, महक, रंगत ऐसी थी कि उसके लिए बड़ी से बड़ी जंग छेड़ी जा सकती थी। चाट का दाम साधारण समोसों से दुगुना था।

राजू भी उन स्वादिष्ट समोसों का दीवाना था। मगर राजू की जेब और उन समोसों की कोई पुश्तैनी दुश्मनी थी। राजू के हाथ मुश्किल से कभी पाँच रुपए लगा करते थे। और जब लगते भी थे तो स्केल, परकार या कॉपी की दरकार उभर आती। उसके जीवन में ज़रूरत पहली सीढ़ी थी और ख्वाहिश सबसे आखिरी मुकाम।

लंच में केंटीन बच्चों से खचाखच भरी रहती थी। उधर बच्चे समोसे का लुफ्त उठाते, और इधर राजू उन्हें निहारकर ही अपना पेट भर लेता। कभी-कभी जब एक-दो रुपए उसके हाथ लगते तो वह केंटीन जाने की हिम्मत करता। उन रुपयों को अपने हाथ में कसे-कसे वह यही गणित लगाता कि इनसे वह किस तरह ज्यादा से ज्यादा और स्वादिष्ट से स्वादिष्ट चीज़ खरीद ले। मगर समोसों से बेहतर उसे केंटीन में कुछ नज़र नहीं आता। और एक-दो रुपयों से समोसों का सौदा सम्भव नहीं हो पाता। इसलिए राजू बिना कुछ लिए ही कई बार केंटीन से लौट जाता।

एक दिन राजू के पिता ने उसके हाथ में दस रुपए थमाए और कहा, “केंटीन से कुछ खा लेना।” हाथ में दस रुपए आते ही राजू के दिमाग में समोसे की तस्वीर बनी। माँ को उसकी आदत पता थी। इसलिए उन्होंने राजू को हिदायत दी कि वह इन पैसों से कुछ खाए, ना कि स्टेशनरी का कोई ज़रूरी सामान खरीद ले। मगर इस बार राजू को इस हिदायत की करत्त ज़रूरत नहीं थी। लंच की घण्टी की पहली ‘टन’ सुनते ही वह केंटीन की ओर भागा। घण्टी की टन-टन के साथ राजू के पैर

ज़मीन में पड़ रहे थे। और अन्तिम ‘टन’ तक वह केंटीन में पहुँच गया था। समोसे अभी तैर ही रहे थे।

“भैया, मेरे लिए दस वाली चाट बनाना।” कहकर वह कड़ाही से कुछ दूर जाकर खड़ा हो गया। उसकी महक से वह अपनी उत्सुकता नहीं खत्म करना चाहता था। दूर खड़ा वह कड़ाही से निकलते गरमागरम समोसों को निहारने लगा। वह सोचने लगा कि समोसे की सबसे खास बात दरअसल उसकी आकृति ही है। खासकर उसके तीन पंख जैसे कोने। खाने वाला उसके दो पंख पकड़ता है और तीसरे पंख को चटनी में डुबो देता है। वह भाग चटनी में पूरा ढूब जाता है और समोसा खाने वाले की आत्मा के भीतर धुस जाता है। या फिर उस पर हल्का दबाव डालने पर उसके तीनों तिकोने हिस्से अलग हो जाते हैं। उसके बीच में चटनी डालकर भी उसे खाया जा सकता है। ऐसा खाने की और किसी चीज के साथ किया जा सकता है क्या? कचौड़ी, ढोकला, गोलगप्पा, पावभाजी आदि? नहीं-नहीं किसी की भी आकृति समोसे जितनी स्वादिष्ट नहीं है। अगर समोसे की आकृति बदल जाए तो इस केंटीन वाले के यहाँ इतनी भीड़ नहीं होगी।

आज बरसात थी। भीड़ काफी थी। राजू बड़ी बेसब्री से अपनी प्लेट का इन्तज़ार कर रहा था। मानो सदियों की तपर्या का फल उसे आज मिलने वाला हो। “आहा!, क्या पल होगा वह जब गरमागरम समोसे का एक टुकड़ा मैं अपने मुँह में भरूँगा। जब वो मेरे मुँह में घुलेगा तो मेरी आत्मा जैसे स्वर्ग की सैर पर निकलेगी। उसका आखिरी निवाला मेरी जीभ के मोक्ष का कारण बनेगा।” वह सोचने लगा। पहले ग्रास से लेकर आखिरी चम्मच तक के स्वाद की सारी कल्पनाओं ने उसकी जीभ का निरीक्षण कर लिया। तभी उसकी तरफ सजा हुआ, महकता हुआ समोसा सरकाया गया। राजू ने

प्लेट में झप्पटा मारा और आसपास किसी ऐसी जगह को ढूँढा जहाँ उसे कोई देख ना पाए। वह अपने और स्वाद से भरे उस प्याले के बीच किसी तरह की रुकावट नहीं चाहता था। उसने एक-एक कौर का स्वाद लिया। और आखिरी निवाले के कुछ देर बाद तक भी वो अपनी उस रस भरी दुनिया से बाहर नहीं निकला।

मन भर जाने के बाद उसने जेब से दस रुपए निकाले। जब वो समोसे की कीमत चुकाने दुकानदार के पास जाने लगा तो उसने देखा कि दुकानदार बहुत व्यस्त है। चूँकि भीड़ बहुत ज्यादा है तो उसे ध्यान ही नहीं है कि किससे रुपए लेने हैं, और किस से ले लिए हैं। राजू ने उस भीड़ को देखा। फिर अपने अँगूठे व उँगली के बीच फँसे दस के नोट को देखा। फिर जार में निकाले गए गरमागरम समोसों को देखा। “अगर मैं इस समोसे वाले को दस रुपए ना दूँ तो? यह पहला विचार था जो उसके मन में कौँधा था। “उसे तो याद ही नहीं है कि मैंने समोसा खाया भी है। वो तो मुझे देख भी नहीं रहा। पैसे ना भी दूँ तो क्या फर्क पड़ेगा। वैसे भी उसकी बहुत बिक्री हो जाती है। कल इन्हीं पैसों से एक समोसा और खाया जा सकता है।”

लंच खत्म होने तक वह इसी उधेड़बुन में रहा कि समोसे की कीमत चुकाई जाए या बेर्इमानी कर एक बार फिर समोसों का लुत्फ उठाया जाए। अन्त में स्वाद ईमान पर भारी पड़ गया। उसने अपने दस रुपए जेब में रखे और वहाँ से चल दिया। मन ही मन वो जानता था कि जो आज उसने किया है, वह सरासर धोखाधड़ी है। कम पैसों की ही सही मगर हेराफेरी है।

स्कूल खत्म होने पर वो साइकिल लिए घर की ओर चल पड़ा। उसका घर एक लम्बी गली के अन्त में था। शाम

होते-होते गली के हर घर से कोई ना कोई काम करने, मन बहलाने या ऊँघने के कारण बाहर रहता। औरतें घड़ी दो घड़ी रसोई से छूटकर गपशप करतीं। मर्द देश-विदेश की चर्चा या बहस करते। और बच्चे खेलते। राजू को गली पार करते हुए अक्सर यही लोग दिख जाया करते थे।

आज तरुणा आंटी भी बाहर ही थीं। वह अपने घर का सारा कचरा बाहर लाकर गली के लगभग बीचोंबीच सूपड़े से उसे उठा रही थी। राजू मध्यम गति से साइकिल चला रहा था। मगर ना जाने कैसे उसकी साइकिल उनके सूपड़े के ऊपर से गुजर गई। और उसके दो टुकड़े हो गए। राजू डर के मारे चुपचाप खड़ा हो गया। कंजूस और तेज़-तर्रार मिजाज़ की तरुणा आंटी ने वही किया जिसकी उनसे उम्मीद थी। उन्होंने राजू की साइकिल पकड़ ली और कहा कि जब तक राजू इसका हर्जाना नहीं भरेगा तब तक वह उसे घर नहीं जाने देंगी। राजू ने बहुत माफी माँगी। मगर वह नहीं मानीं।



फिर राजू ने कहा कि वह थोड़ी देर में आकर उनको इसकी कीमत दे देगा। यह सुनकर तरुणा आंटी ने उसे जाने दिया। उसने सोचा तरुणा आंटी केवल डराने के लिए यह सब कर रही हैं। थोड़ी देर में भूल जाएँगी।

घर आकर वह फिर कल का ही इन्तजार करने लगा। सूपड़े के टूट जाने की घटना से वह अपनी करतूत की घबराहट को भूल चुका था। वह समोसे का स्वाद अपनी जीभ में खोजने लगा। तभी उसके दरवाजे पर दस्तक हुई। दरवाजा राजू की माँ ने खोला। राजू ने झुककर देखा तो तरुणा आंटी थी। रायता घर तक फैल चुका था। इससे पहले कि सारी गाथा माँ को मिर्च-मसाला लगाकर सुनाई जाती अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए उसने आनन्द-फानन में वही दस रुपए उन्हें थमा दिए।

उनके जाने के बाद राजू ने समोसों की महक से लेकर सूपड़े के टूटने तक की सारी कहानी माँ को सुना दी। मगर उसने अपनी माँ को यह नहीं बताया कि उसने समोसे खाए और उनका दाम नहीं चुकाया। उसने यही कहा कि उसने समोसे नहीं खाए।

और अगले दिन वह इन्हीं पैसों से समोसे खाने वाला था। माँ भाँप तो गई थीं कि

इस पूरी कहानी में कहीं न कहीं कोई झोल है। अपने बेटे की आँखों में वह छल और मासूमियत दोनों देख पा रही थीं। साथ ही अपनी गरीबी और बेटे के समोसों के लिए इस तरह तरसते रहने की सारी घटना से उनका दिल भर आया था।

अगले दिन फिर पूरा स्कूल उसी जानी-पहचानी सुगन्ध से महक उठा था। राजू

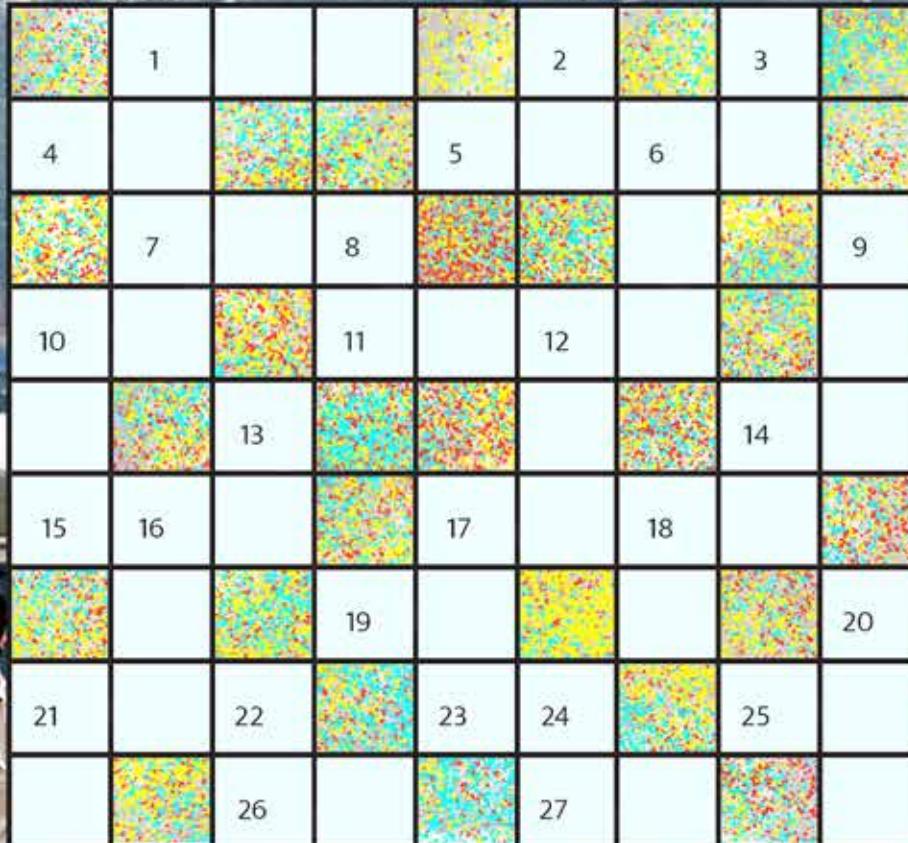


के पास रुपए नहीं थे। पता नहीं फिर भी क्यों वह केंटीन की ओर दौड़ पड़ा। आज भी बारिश थी। राजू आधा भीग चुका था। यह जानते हुए भी कि उसकी जेब खाली है, उसने धीमे से अपना दाहिना हाथ अपनी जेब में डाला। उसका दिल तेज़-तेज़ धड़कने लगा। उसके हाथ में एक मुड़ा-तुड़ा सा नोट आया। उसने यह सोचने की ज़रा भी कोशिश नहीं की कि यह पैसे कहाँ से आए। वह बस कल की बेईमानी के लिए पहचाने जाने के डर से भरा हुआ था।

धीमे-धीमे चलकर वह समोसे वाले के पास पहुँचा। समोसे वाले ने पहले उसके चेहरे को देखा। फिर उसकी हथेली में फँसा हुआ दस का नोट देखा। फिर दोबारा उसने उसकी आँखों में देखा। उसे लगा समोसों की चाह इतनी प्रबल है कि बच्चा बोलकर समोसे नहीं माँग पा रहा है। उसने फिर फुर्ती-से उसी तरह एक प्लेट सजाकर उसकी ओर सरका दी। राजू उन समोसों को कुछ देर देखता रहा। उसके मुँह में पानी भर आया था। उसने सारे लालच को एक धूंट में अन्दर गटक लिया। दस रुपए समोसे वाले को थमाए और प्लेट को वापस समोसे वाले की तरफ खिसका दिया। और वहाँ से भाग गया। समोसे वाला कुछ समझा भी और नहीं भी समझा। वह प्लेट उसने दूसरे लड़के को थमा दी जो राजू की ही तरह बड़ी उत्सुकता से समोसे का इन्तजार कर रहा था।

चित्र पहेली

बाँसे दाँसे →
ऊपर से नीचे



3		5		1	8		6
						7	
4	6	7				2	
		4		7	6	5	9
6			4	8	2	1	7
2	7		9	5	6	3	4
4		6			7		5
7		3	5			9	
	8		7	9	4	1	

सुडोकू 82

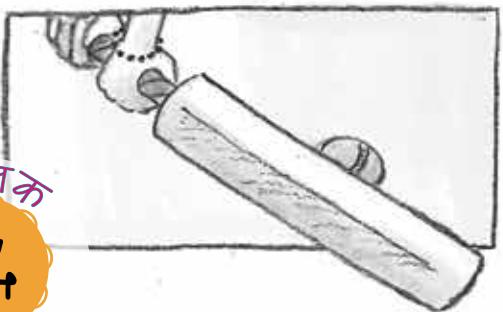
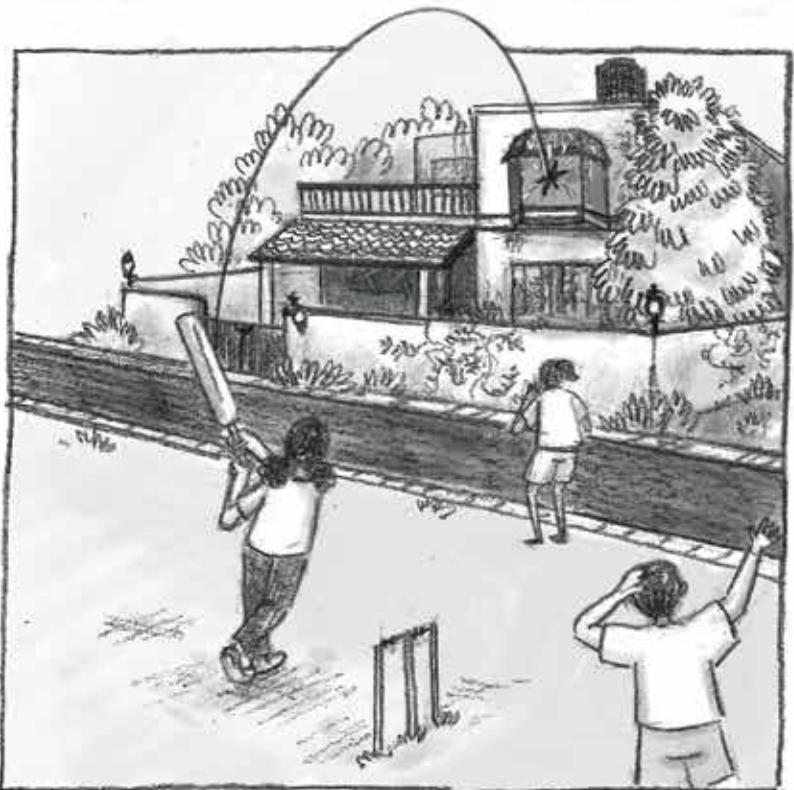
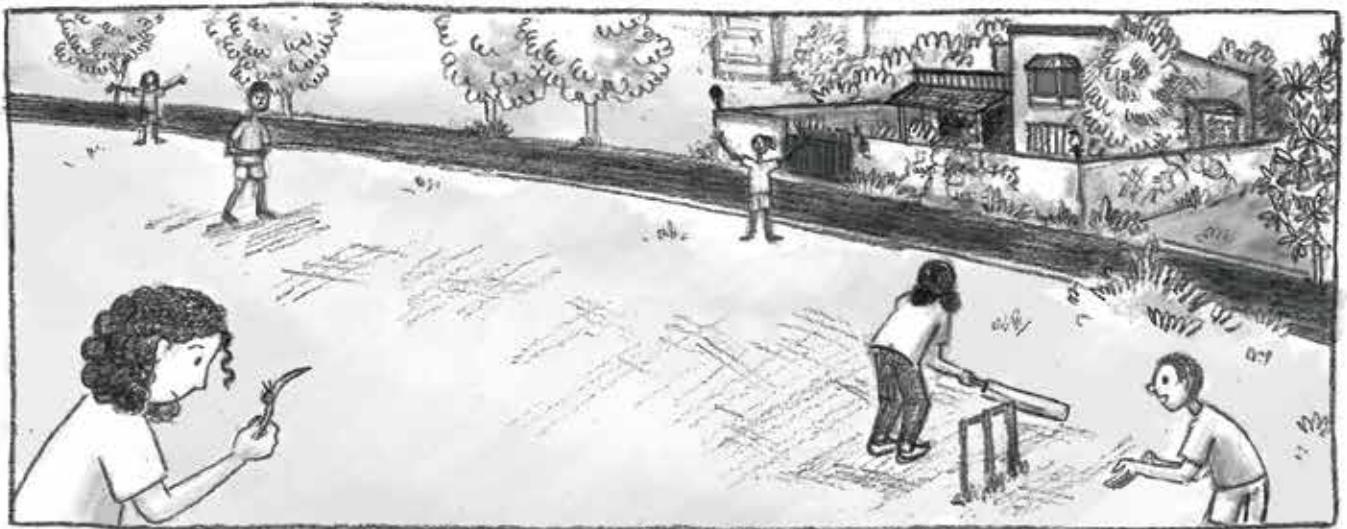
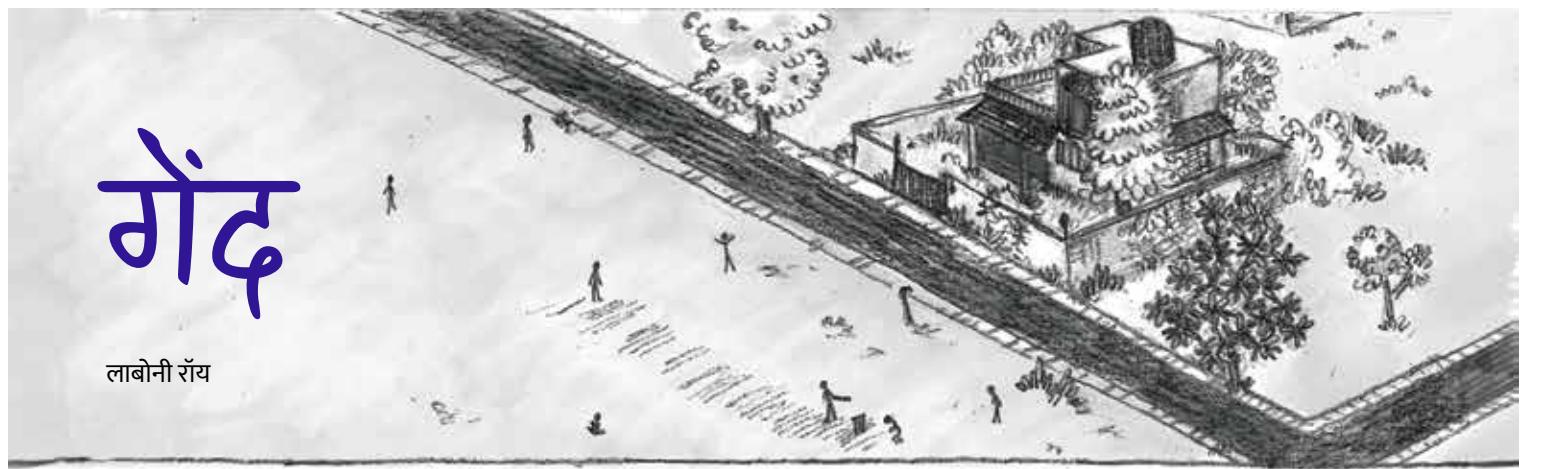
दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।



क्रमांक
23

गेंद

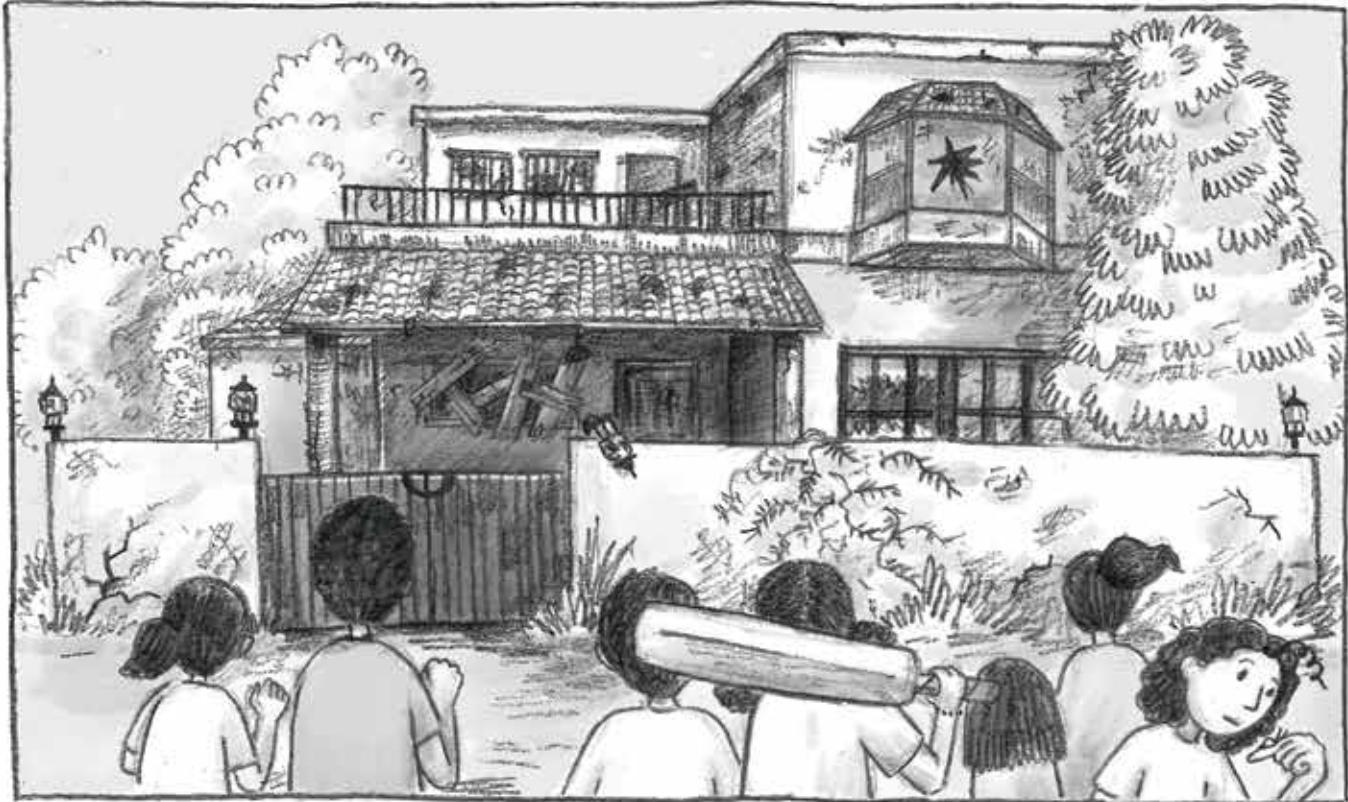
लाबोनी रँय

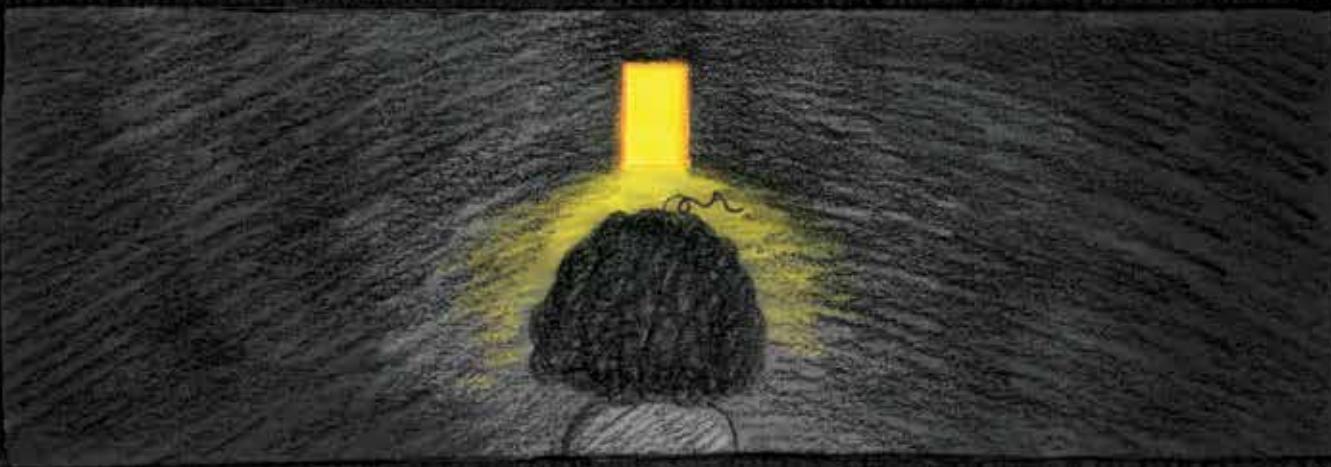


क्रिकेट

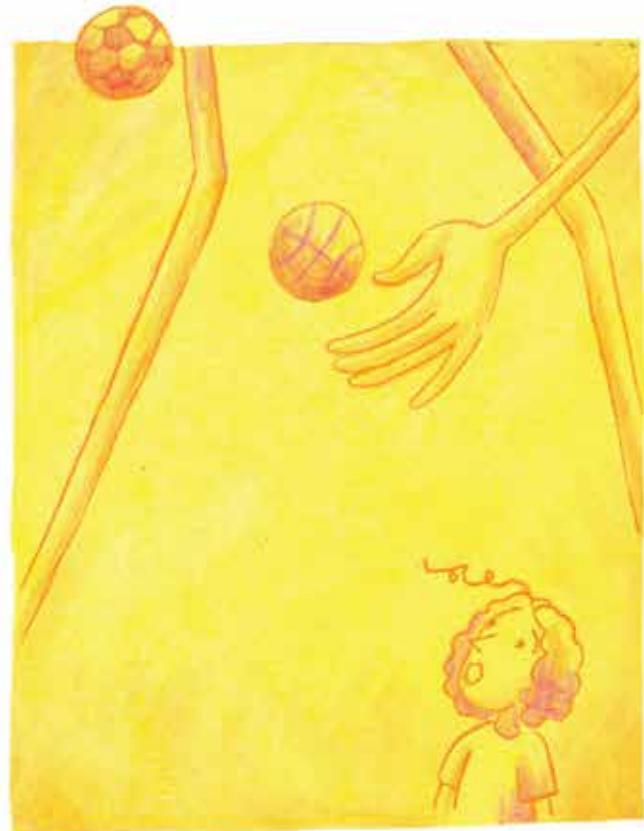
24

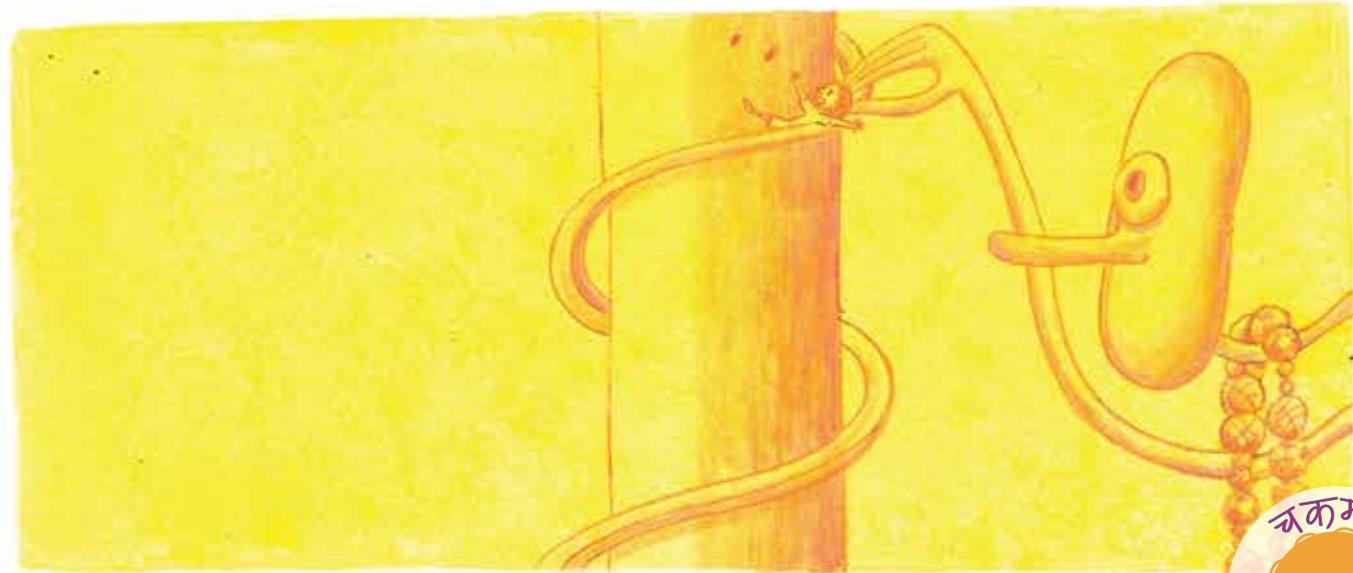
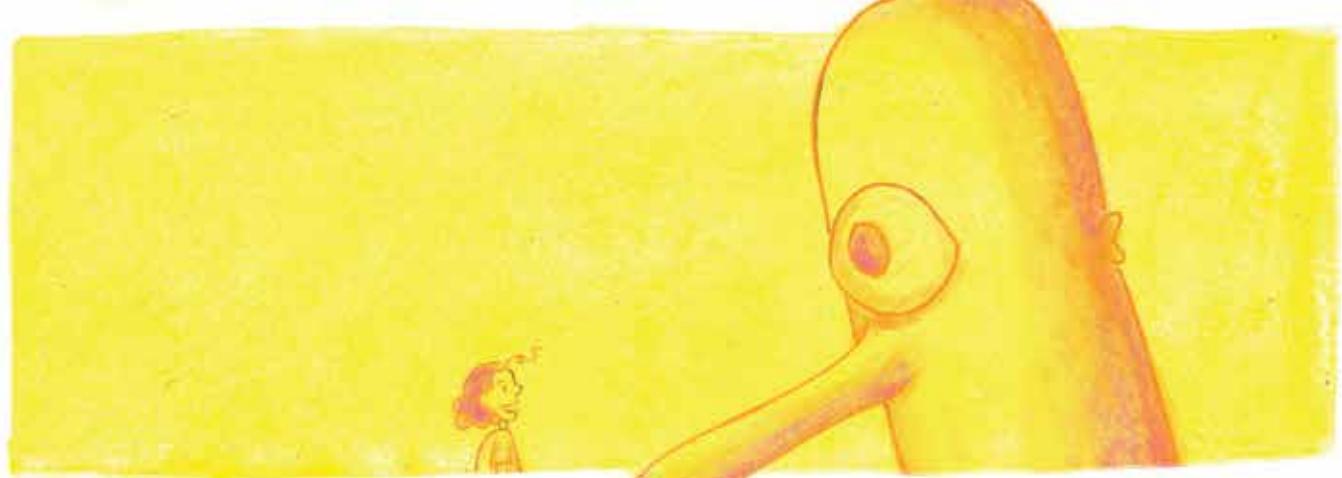
मार्च 2025



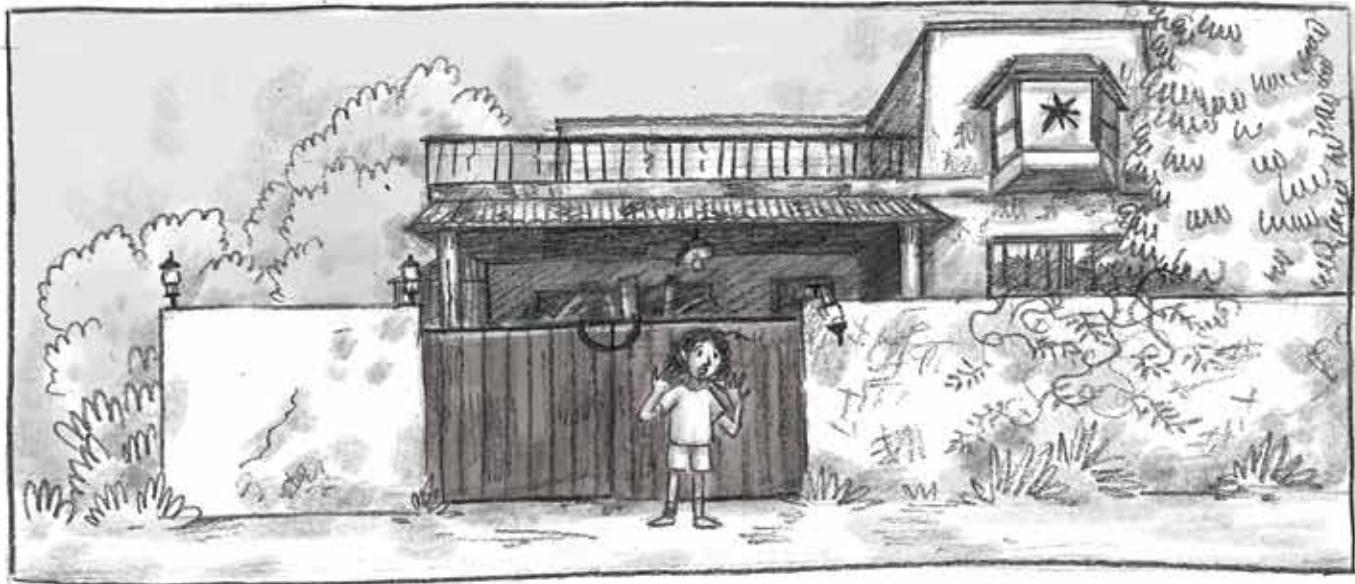












मंडक

वक्तव्य

31

मार्च 2025

पंखे कब चलाने चाहिए...

इस मामले में यूएस के सेंटर फॉर डिसीज़ कंट्रोल (CDC – Center for Disease Control) ने 32.2 डिग्री सेल्सियस से कम तापमान पर ही पंखे चलाने की सलाह दी है। जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO – World Health Organization) की सलाह है कि 40 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान पर पंखा चला सकते हैं। सवाल उठता है कि पंखे का उपयोग कब सुरक्षित है और कब तकलीफदायक?

इसके समाधान के लिए दो अध्ययनों ने तापमान और नमी दोनों को ध्यान में रखते हुए यह निर्धारित करने का प्रयास किया है कि पंखे का उपयोग कब फायदेमन्द है और कब नुकसानदेह। एक अध्ययन में, शोधकर्ताओं ने 65 वर्ष से अधिक आयु के लोगों पर दो परिस्थितियों में पंखे के असर का परीक्षण किया। एक गर्म और नम (38 डिग्री सेल्सियस और 60 प्रतिशत आर्द्रता) और दूसरी गर्म और शुष्क (45 डिग्री सेल्सियस और 15 प्रतिशत आर्द्रता)।

परिणामों से पता चला कि नम परिस्थिति में, पंखे 38 डिग्री सेल्सियस तक भी फायदेमन्द थे। पंखे ने पसीने को अधिक प्रभावी ढंग से वास्थित करने में मदद की, जिससे हृदय सम्बन्धी तनाव 31 प्रतिशत तक कम हुआ। इस स्थिति में जब प्रतिभागियों पर पानी छिड़का गया तो उनके हृदय सम्बन्धी तनाव में 55 प्रतिशत तक की कम आई।

दूसरी ओर शुष्क गर्मी में परिणाम बिलकुल अलग थे। कम नमी में 45 डिग्री सेल्सियस पर पंखा हानिकारक साबित हुआ। नमी की कमी के कारण पसीना बहुत जल्दी वास्थित हो गया,



जिससे बहुत कम ठण्डक मिली। नतीजा, प्रतिभागियों को गम्भीर हृदय तनाव हुआ और प्रयोग जल्दी रोकना पड़ा। इससे पता चलता है कि नमी की उपस्थिति में पंखे सुरक्षित हैं और CDC द्वारा सुझाए गए तापमान से अधिक तापमान पर भी फायदेमन्द हैं। लेकिन शुष्क गर्मी में पंखे गर्म हवा को फैलाकर गर्मी बढ़ा सकते हैं।

दूसरे अध्ययन में भी इसी तरह के परीक्षण किए गए। वहाँ कमरे में नमी 45 प्रतिशत और तापमान 36 डिग्री सेल्सियस रखा गया। पंखा चलाने पर शरीर का कोर तापमान 0.1 डिग्री सेल्सियस तक कम हुआ और हृदय गति थोड़ी कम हुई। लेकिन इसके लाभ पहले अध्ययन की तरह नहीं थे। इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि पंखे कुछ हद तक राहत दे सकते हैं, लेकिन 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान पर बुजुर्गों को ठण्डक देने में प्रभावी नहीं होते।

तो क्या करें? WHO ने पंखे के इस्तेमाल की सीमा 40 डिग्री सेल्सियस तक रखी है, तो CDC 32.2 डिग्री सेल्सियस की सीमा पर कायम है। लेकिन दोनों संगठन इस बात पर सहमत हैं कि पंखे के इस्तेमाल की सुरक्षित स्थिति निर्धारित करने के लिए अधिक शोध की आवश्यकता है। तो, सटीक सलाह आने तक तुम अपनी सहूलियत के हिसाब से पंखा चलाओ और जिस तापमान पर तुम्हें पंखे से परेशानी होने लगे, बिना झिझके पंखा बन्द कर दो।



गिरगिट ने जो फिर पाया
हाइड एंड सीक अवार्ड
पीछे चीख पड़ी जनता,
“बेमंटी है माय लॉर्ड!

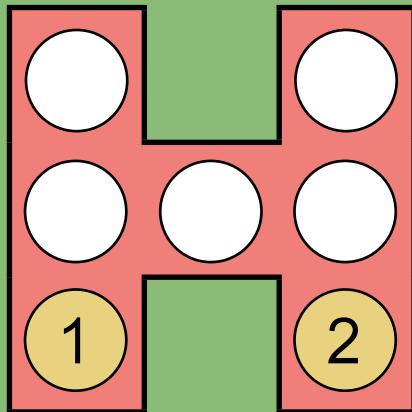
पत्तों में छिपता गिरगिट
करता केमोफ्लाज
रंग बदल गायब होता
कोई कैसे दे-दे मात?”

बेमंटी

अमित कुमार
चित्र: शुभम लखेरा



1. दिए गए चित्र के गोलों में 1 से 7 तक की संख्याएँ इस तरह भरो कि आड़ी, खड़ी व तिरछी लाइन के गोलों की संख्याओं का जोड़ बराबर हो।

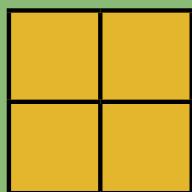


2. माही की कहानियों की किताब खो गई। उसने अयान, बेला और चार्ली से पूछा। अयान ने कहा, “किताब मैंने नहीं ली।” बेला ने कहा, “किताब अयान ने ली है।” चार्ली ने कहा, “किताब मैंने नहीं ली।” अगर तीनों में से कोई एक ही सच बोल रहा हो, तो बताओ किताब किसने ली होगी?

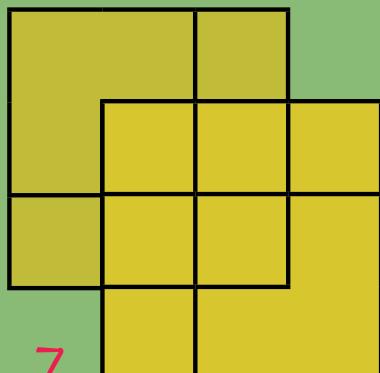
3.

5. तुम्हारे सर के ऊपर पंखा धूम रहा है। तुम्हें माचिस की तीली जलानी है। लेकिन शर्त यह है कि तीली पूरी जलानी चाहिए और पंखा भी धूमते रहना चाहिए। ऐसा कैसे कर सकते हैं?

6. प्रश्न वाली जगह पर कौन-सी संख्या आएगी?



= 5



= ?

दी गई ग्रिड में घर में इस्तेमाल होने वाली कई सारी चीज़ों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

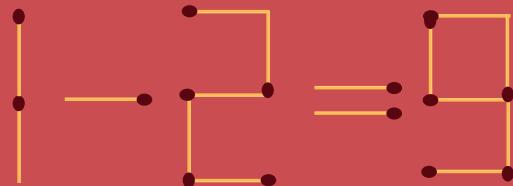


4.

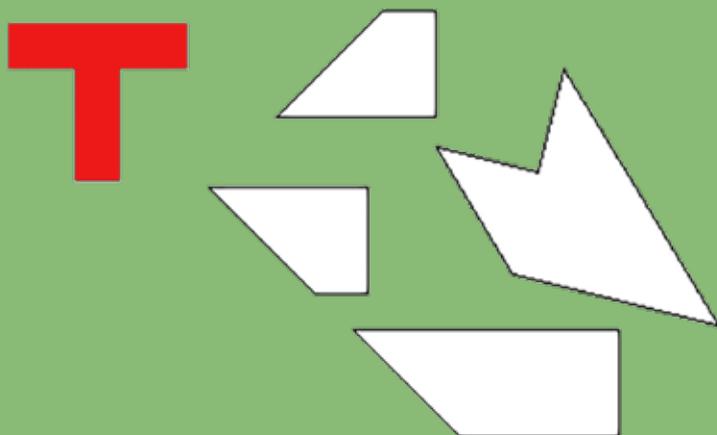
प्रिशा के पास 18 गुब्बारे हैं, जिनमें से 7 गुब्बारे उसने फोड़ दिए, 6 गुब्बारे अपने दोस्त को दे दिए और 5 गुब्बारे खो गए। बाद में वह 1 और गुब्बारा खरीदकर लाई। बताओ उसके पास कितने गुब्बारे बचे?

दा	अ	टै	ची	ला	च	श्मा	ट	पं
कं	ब	ल	म	छ	खा	पि	मा	खा
घी	ल्ब	चा	मा	त	आ	रू	चि	म
ह	थौ	ड़ी	द	री	सु	ई	स	च्छ
शी	अ	ख	बा	र	मे	ज़	ना	र
शी	कु	झा	ल्टी	सा	बु	न	चा	दा
फ्रि	टी	र	झ	कू	ड़ा	दा	न	जी
कि	ज़	वी	सी	चा	र्ज	र	टॉ	र्च
पे	च	क	स	जी	ला	चा	बी	ता

8. केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही करना है, कैसे करोगे?



9. दिए गए टुकड़ों को जोड़कर T की आकृति बनाना है। करके देखो।



10. दी गई श्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग रंग के बटन आने चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से रंग के बटन आएँगे?

काथा चर्ची

अमीर खुसरो की पहेलियाँ

प्रस्तुति: वसुन्धरा बहुगुणा

बीसों का सर काट लिया
ना मारा, ना खून किया।
(फ़ृश्चास)

एक गुनी ने ये गुन कीना
हरियल पिंजरे में दे दीना।
देखो जादूगर का कमाल
डारे हरा निकाले लाल।
(नाम)

एक परख है सुन्दर मूरत
जो देखे वो उसी की सूरत।
फिक्र पहेली पाई ना
बूझन लागा आई ना।
(फ़ृश्चास)

बाला था जब सबको भाया
बड़ा हुआ कुछ काम न आया।
खुसरो कह दिया उसका नाँव
अर्थ कहो नहीं छाड़ो गाँव।
(एष्ट्री)

एक थाल मोती से भरा
सबके सिर पर औँधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे
मोती उससे एक न गिरे।
(शक्काच)

जिमी मेरा दोस्त

कविता

सातवीं, अंजीम प्रेमजी स्कूल
बाड़मेर, राजस्थान

उन दिनों मैं मेरे ननिहाल में
रहती थी। मैं स्कूल से खुशी-
खुशी घर जा रही थी क्योंकि
उस दिन हमारे स्कूल की
बस नहीं आई थी। मैं जब घर
पहुँची तो नानी की गोद में एक छोटा-



सा कुत्ता बैठा था। मैंने अपना बैग फेंका और नानी
के पास गई। और कुत्ते को अपनी गोद में ले लिया। तब मेरे नानाजी
ने कहा, “अब हम तो इसे नाम दे नहीं सकते।” तो मैंने कहा, “मैं
नाम बताऊँ?” तो नानी ने कहा, “क्या नाम रखोगी?” मैंने कहा,
“जिमी है इसका नाम।” फिर सब उसे जिमी कहने लगे।

उसे बारिश बहुत पसन्द थी क्योंकि हम बारिश के समय
क्रिकेट खेलते थे और जिमी बॉल लाता था। वह जब
आया तब मैं 5 साल की थी। वह कहीं पर भी होता
और हम उसे बुलाते तो वह आ जाता। उसकी
अच्छी बात थी कि वह जानवरों को मारता नहीं
था। लेकिन किसी से मार ज़रूर खा लेता
था। वह मेरा पक्का दोस्त था। वह
जानवरों का ध्यान रखता जब मेरी
दादी की तबीयत ठीक नहीं होती।

वह हमारे साथ 4 साल रहा। हमारे
घर के पास एक घर था। वहाँ रहनेवालों को कुत्ते
पसन्द नहीं थे। तो उन्होंने कुत्ते को मारने के
लिए रोटी के अन्दर काँच रख दिया। उस
काँच को जिमी ने खा लिया और वह मर
गया। मैंने उसके साथ बहुत मस्ती की। जब
भी मैं बाड़मेर से या स्कूल से आती तो वह
मेरा बैग चैक करता था क्योंकि उसे पता
होता था कि बैग में उसके लिए बिस्किट है।



जब मेरी नानी घूमने के लिए तीर्थयात्रा पर गई थीं तब अचानक से उनकी तबीयत खराब हो गई। थोड़े समय बाद उनकी मृत्यु भी हो गई। उनका अन्तिम संस्कार वहीं पर कर दिया गया। मैंने अपनी नानी को देखा भी नहीं था। पर हाँ, मैंने उनके बारे में अपनी मम्मी से सुना बहुत है।

मेरी मम्मी बताती हैं कि मेरी नानी गरीब लोगों की बहुत मदद करती थीं। जब मेरी ताई के घर उनकी मम्मी आती हैं तो मेरी मम्मी सोचती हैं कि अगर मेरी मम्मी होतीं तो वो भी मेरे घर आतीं। इस बात से मेरी मम्मी उदास हो जाती हैं। कुछ सालों बाद मेरे नाना जी का भी देहान्त हो गया। उस समय मैं बहुत छोटी थी।

जब मेरे दोस्त अपने नाना-नानी की बात करते हैं, तो मुझे अपने नाना-नानी की बहुत याद आती है। मैं उदास हो जाती हूँ। मेरी दोस्त पूनम बोलती है कि मेरे नाना-नानी तेरे भी तो नाना-नानी हैं। मैं यह सुनकर खुश हो जाती हूँ। जब भी मैं उनसे मिलती हूँ तो मुझे नाना-नानी की ही तरह प्यार व स्नेह मिलता है।



चित्र: अविराज चौपड़ा, तीसरी, कान्हा, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

वे तेरे भी नाना-नानी हैं

शीतल

दसवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक
पाठशाला, स्यांजी, मण्डी
हिमाचल प्रदेश

क्रम के

37

मार्च 2025

माँ का साथ

आदित्य

चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला सीतापुर, सरगुजा छत्तीसगढ़

मेरी माँ सुबह 6 बजे उठती थीं। फिर मुझे उठाती थीं। उसके बाद मैं और मेरी माँ ब्रश करते थे। फिर माँ नाश्ता बनाने चली जातीं और मैं स्कूल के लिए तैयार होने लगता। तब तक मम्मी नाश्ता बना लेतीं। फिर नाश्ता करके मैं स्कूल जाता। फिर मम्मी नहाकर कपड़ा धोतीं, खाना बनातीं और फिर थोड़ी देर सो जातीं। उसके बाद कपड़ा उठातीं। फिर दुकान पर बैठती थीं। तब पापा मुझे स्कूल से ले आते। फिर मैं खाना खाकर अपने छोटे भाई के साथ खेलता। माँ हमें खेलते हुए देखतीं। माँ अब हमारे साथ नहीं रहतीं। वो भगवान जी के साथ रहती हैं। मुझे उनकी बहुत याद आती है। भगवान जी मेरी माँ को वापिस ला दो।



जब मैं तीन वर्ष की थी तो अपने परिवार के साथ बम्बई गई थी। मेरे पापा वहीं रहते हैं और टैक्सी चलाते हैं। तब मेरे भैया 6 साल के थे। एक दिन वो घर से दूर मैदान में खेलने गए। मैं भी उनके पीछे-पीछे भाग गई। हम लोग जिस मोहल्ले में रहते थे वो बहुत घनी बसावट वाला था। मैदान में भैया के बहुत-से दोस्त थे। मैं भी पास में खेलने लगी। खेलते-खेलते मैं एक गटर के पास पहुँच गई और उसमें गिर गई।

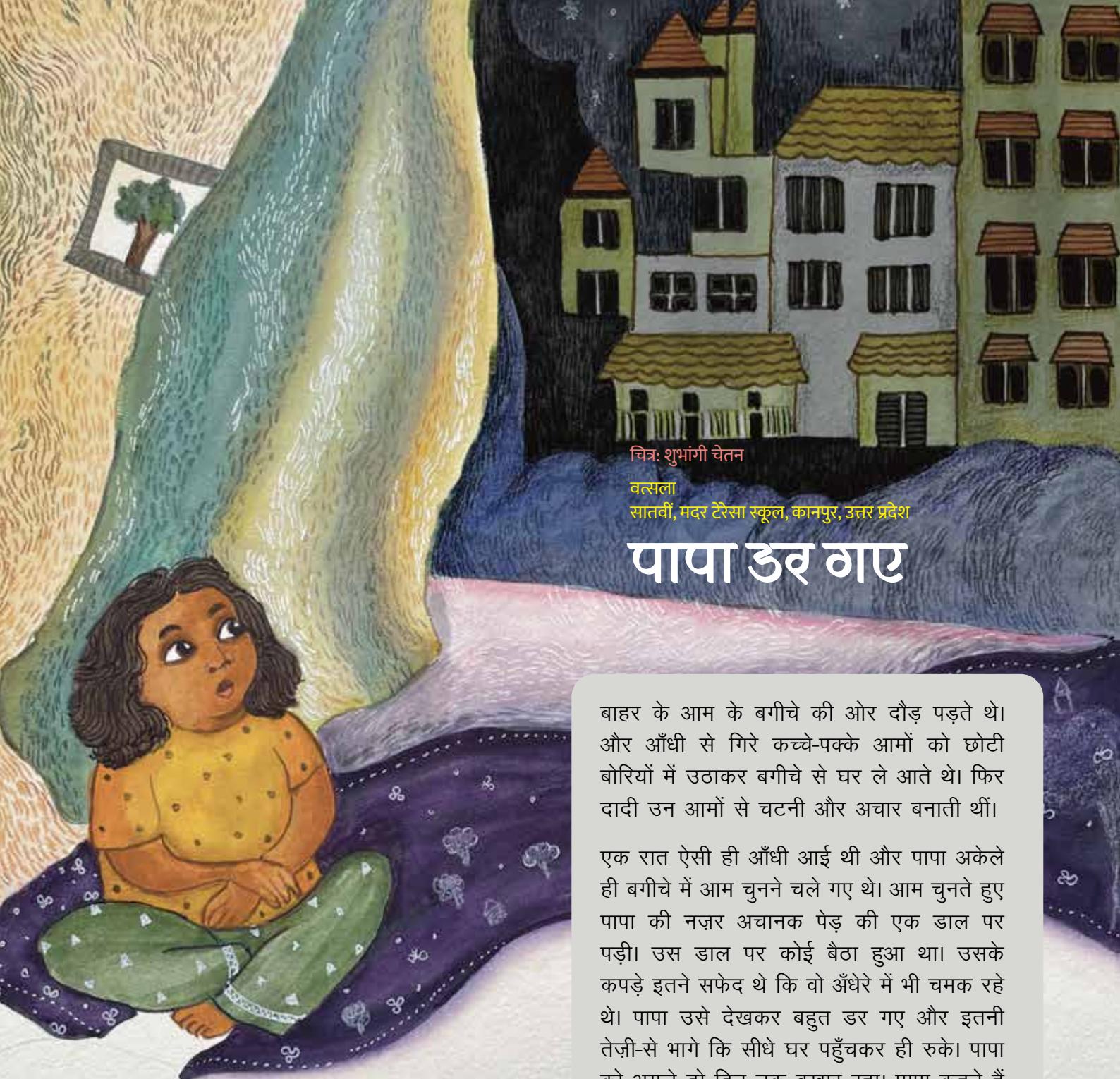
ज़ोर की आवाज़ सुनकर बहुत-से लोग पहुँच गए। गटर में मैं खड़ी थी। वो बहुत गहरा नहीं था। लेकिन उसमें बहुत गन्दा पानी और कचरा बह रहा था। मुझे कुछ लोगों ने निकाला और 20 बाल्टी पानी से नहलाया। तब तक मेरी मम्मी भी रोते हुए वहाँ पहुँच गई। उन्होंने मुझे गोदी में उठा लिया और घर लाकर फिर से नहलाया। तब से मुझे लगता है कि गटर में कैसे लोग साफ-सफाई करते होंगे।

जब मैं गिरी...

रजिया

छठवीं, कम्पोजिट स्कूल
धुसाह, बलरामपुर
उत्तर प्रदेश

चित्र: लोकेश यादव, छठवीं, एकलव्य फाउंडेशन, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश



चित्र: शुभांगी चेतन

वत्सला

सातवीं, मदर टेरेसा स्कूल, कानपुर, उत्तर प्रदेश

पापा उर गए

पिछले साल गर्मी में एक सुबह चार बजे जोर-जोर से आँधी आई। घर के दरवाजे-खिड़कियाँ खड़खड़ाने लगे। मेरी नींद टूट गई। पापा ने मुझे जगा हुआ देखकर अपने बचपन के बारे में बताया कि उस समय जब आँधी आती थी तो कैसे पापा अपने भाई-बहनों के साथ गाँव के

बाहर के आम के बगीचे की ओर दौड़ पड़ते थे। और आँधी से गिरे कच्चे-पक्के आमों को छोटी बोरियों में उठाकर बगीचे से घर ले आते थे। फिर दादी उन आमों से चटनी और अचार बनाती थीं।

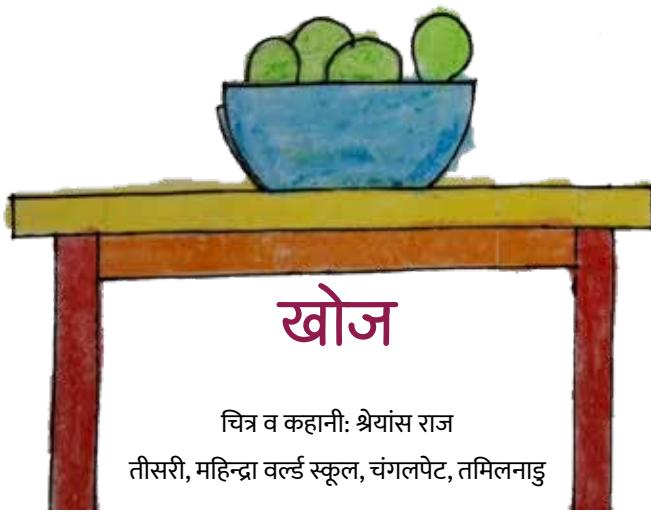
एक रात ऐसी ही आँधी आई थी और पापा अकेले ही बगीचे में आम चुनने चले गए थे। आम चुनते हुए पापा की नज़र अचानक पेड़ की एक डाल पर पड़ी। उस डाल पर कोई बैठा हुआ था। उसके कपड़े इतने सफेद थे कि वो अँधेरे में भी चमक रहे थे। पापा उसे देखकर बहुत डर गए और इतनी तेज़ी-से भागे कि सीधे घर पहुँचकर ही रुके। पापा को अगले दो दिन तक बुखार रहा। पापा कहते हैं कि वो शायद कोई भूत था। उस जमाने में भूत-प्रेत की ढेर सारी कहानियाँ हुआ करती थीं।

मैं गाँव में नहीं रहती। फ्लैट में रहती हूँ। मेरे घर के पास कोई बगीचा भी नहीं है। एक-दो पार्क हैं। पर शायद आम का कोई भी पेड़ नहीं है उनमें। न जाने भूत कैसा होता है? पेड़ पर रहने वाला भूत...



सुबह तड़के जब मेरी माँ
उठीं तो उन्होंने देखा कि
एक बड़ा चमगादड़ कमरे
में चक्कर लगा रहा है।

उसे बाहर जाने का रास्ता
नहीं मिल रहा था। इसलिए वह
चीख रहा था। माँ ने सारे खिड़की-दरवाजे
खोल दिए। काफी चक्कर लगाने के बाद
वह बाहर निकल गया और पास के एक
पेड़ पर उलटा लटक गया। हमें ये समझ
नहीं आ रहा था कि वह अन्दर कैसे आया।
तभी मेरी नज़र खाने की मेज़ पर रखी
फलों की टोकरी पर गई। पके अमरुदों को
चमगादड़ ने खाया था। पास में खिड़की
थोड़ी खुली थी। चमगादड़ पके हुए अमरुदों
की खुशबू से खिंचा हुआ खिड़की से अन्दर
आ गया था। उसे बाहर जाने का रास्ता
नहीं मिल रहा था। सारी बात समझ में आते
ही हम सब हँस पड़े।



खोज

चित्र व कहानी: श्रेयांस राज

तीसरी, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु



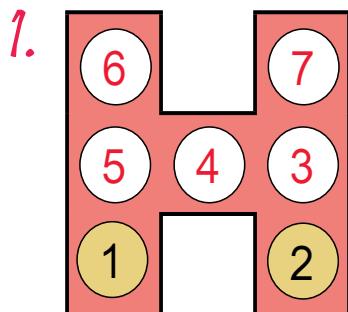
चित्र: वैष्णवी यादव, चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला,
मरोड़ा, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

मटर, मटर, मटर...

जानवी
पाँचवीं, बाल भारती पब्लिक स्कूल
भोपाल, मध्य प्रदेश

ठण्ड शुरू होते ही
सब हो जाता मटर-मटर
नॉर्मल दिन किलो भर
मार्केट के दिन 5 किलो
छीलो फिर सब मिलकर
होता है क्या सुनो फिर
पोहे में मटर, उपसे में मटर
आलू में मटर, गोभी में मटर
मेथी में मटर, पालक में मटर
भर्ते में मटर, पनीर में मटर
चटनी में मटर, कचौड़ी में मटर
समोसे में मटर, मैगी में मटर
पास्ता में मटर
खाते रहते चटर-पटर
मटर, मटर, मटर...

काठा पत्ती जवाब



10.



क्रमक्र

42

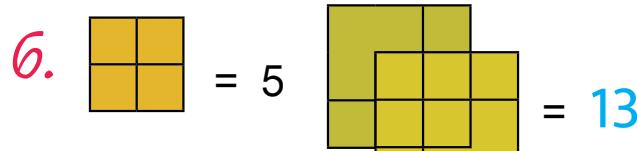
मार्च 2025

2. यदि बेला सच बोल रही है तो चार्ली की बात भी सही हो जाएगी। ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि एक ही व्यक्ति सच बोल रहा है। इसलिए बेला झूठ बोल रही है और अयान ने किताब नहीं ली है। अब मान लो किताब बेला ने ली है। तब भी अयान और चार्ली दोनों की बात सच हो जाएगी। तो बेला ने भी किताब नहीं ली है। यानी किताब चार्ली ने ली है।

3. $15 \times 5 = 75$

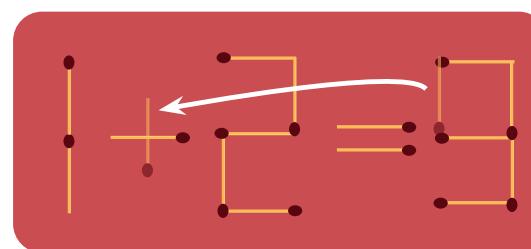
4. वही 1 गुब्बारा, जो वो बाद में खरीदकर लाई।

5. आसान है, पंखे का बटन बन्द कर दो। बन्द करने के बाद भी पंखा थोड़ी देर घूमता ही है। इस तरह तीली भी पूरी जल जाएगी और पंखा भी घूमता रहेगा।



पहले वाले चित्र में 5 चौकोर हैं, दूसरे वाले चित्र में 13 चौकोर हैं।

8. इसके और भी हल हो सकते हैं। एक हमने यहाँ दिया है:



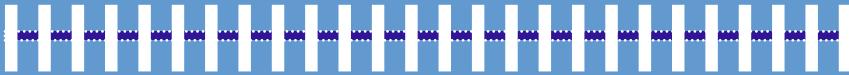
इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1 ता	2 मैं	3 ये	4 गव
र	5 ये	6 का	7 ये
8 ती	9 ता	10 ता	11 टी
व	र	र	ये
12 ता	त	13 टे	14 टी
15 च	ती	16 ना	क
17 गव	री	18 ना	श
22 वा	ट	न	त
24 मा	ही	25 वे	ट
		26 दे	म

सुडोकू-82 का जवाब

3	2	5	4	7	1	8	9	6
1	9	8	2	6	5	4	7	3
4	6	7	8	3	9	5	2	1
8	3	4	1	2	7	6	5	9
6	5	9	3	4	8	2	1	7
2	7	1	9	5	6	3	4	8
9	4	2	6	1	3	7	8	5
7	1	3	5	8	2	9	6	4
5	8	6	7	9	4	1	3	2

तुम भी जानो



पृथ्वी के कोर की बदलती आकृति

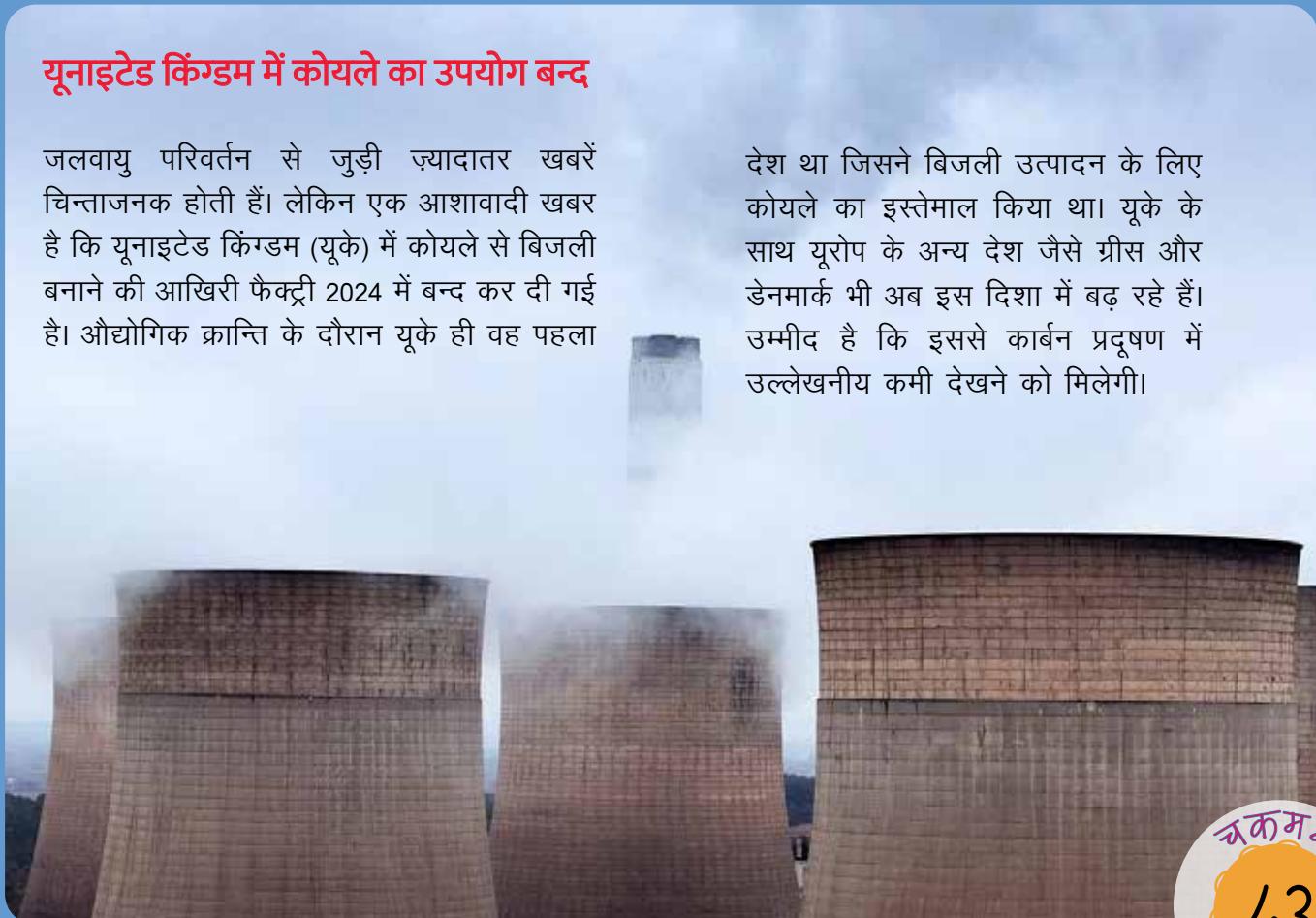
पृथ्वी का आन्तरिक कोर लोहे और निकल का एक ठोस गोला है। यह सतह से 6400 किलोमीटर से 5180 किलोमीटर की गहराई पर स्थित है। जहाँ तक हमें पता था यह पृथ्वी की सतह की दिशा में, लेकिन उससे कुछ ज्यादा गति से घूमता था। हाल ही में भूकम्पीय तरंगों की जाँच से पता चला है कि 2010 से इस कोर के घूमने की गति कम होती गई है और अब इसकी दिशा उलट गई है। साथ ही कोर की आकृति में भी बदलाव हो रहे हैं। इन रोचक बदलाव के कारणों का अभी पता नहीं। लेकिन इनका असर पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र पर हो सकता है, जो हमारी पृथ्वी को सौर विकिरण से बचाता है।



यूनाइटेड किंगडम में कोयले का उपयोग बन्द

जलवायु परिवर्तन से जुड़ी ज्यादातर खबरें चिन्ताजनक होती हैं। लेकिन एक आशावादी खबर है कि यूनाइटेड किंगडम (यूके) में कोयले से विजली बनाने की आखिरी फैक्ट्री 2024 में बन्द कर दी गई है। औद्योगिक क्रान्ति के दौरान यूके ही वह पहला

देश था जिसने विजली उत्पादन के लिए कोयले का इस्तेमाल किया था। यूके के साथ यूरोप के अन्य देश जैसे ग्रीस और डेनमार्क भी अब इस दिशा में बढ़ रहे हैं। उम्मीद है कि इससे कार्बन प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी देखने को मिलेगी।



सकल बन

अमीर खुसरो

चित्र: प्रिया कुरियन

सकल बन फूल रही सरसों
बन बन फूल रही सरसों

अम्बवा फूटे टेसू फूले
कोयल बोले डार-डार
और गोरी करत सिंगार
मलनियाँ गढ़वा ले आई कर सों
सकल बन फूल रही सरसों।

तरह-तरह के फूल खिलाए
ले गढ़वा हाथन में आए
निजामुद्दीन के दरवज्जे पर
आवन कट गए आशिक रंग
और बीत गए बरसों
सकल बन फूल रही सरसों।

